श्रीमद्धनञ्जयकविविरचित—

नाम-माला।

का

सरल हिन्दी अनुवाद।

महरौनी (झांसी) निवासी घनश्यामदास जैन
प्रधान-अध्यापक सेठ स्व० हु० दि०
जैन महाविद्यालय—इन्दौर।

प्रथमावृत्ति] वीर नि० सं. २४५२ [मूल्य ।≡) आने

नम्र निवेदन।



इस पुस्तक के तथा इसके रचयिता के विषय में विशेष कुछ लिखने की आवश्यकता नहीं प्रतीत होती क्योंकि इन दोनों से ही हमारे पाठक चिरपरिचित हैं-पर, इतना नम्र निवेदन कर देना आवश्यक है कि कारण वश इस पुस्तक के छपने में कई अशुद्धिएँ रह गईं हैं उनको, विज्ञ पाठक शुद्धि पत्र देख कर पहले सुधार लेवें, पीछे पढ़ें, तो मैं उनका बहुत २ आभार मानूँगा।

बन्शीधर जैन मास्टर

ललितपुर (झांसी)

शुद्धिपत्र ।

अशुद्धि	शुद्धि	पत्रसंख्या ।
व_मता	वसुमती	३
विश्वभरा	विश्वंभरा	३
वर्वत	पर्वत	३
शिखरी	शिखरी	३
शिलेच्चय	शिलोच्चय	३
प्लग	प्लवग	४
वनेचरः	वनचरः	५
ययस्	पयस्	५
दीयता	दयिता	१०
वैर्यरति	वैर्यराति	१२
अर्चिर्गों	अर्चिर्गों	१३
मातण्ड	मार्तण्ड	१४
स्वर्द्याः	स्वर्द्याः	१६
सनासीर	सुनाशीर	१६
सुत्रामन	सुत्रामन्	१६
प्रथमाधिप	प्रमथाधिप	१६
वाणिसूदन	वीणासूदन	२०
हदयं	हृदयं	२२
विध्नकरः	विघ्नकरः	२२

अशुद्धि	शुद्धि	पत्रसंख्या ।
स्तंबेरम	स्तम्बेरमः	२४
धमनधिम	धमनीधम	२७
प्ररभ्य	प्रारभ्य	२८
परायात्मा	पुण्यात्मा	३२
यौनानिक	यौवनिक	३४
निवृत	निर्वृत	३७
किसान(खितहड़), वलभद्र		३६
पिशग्यपि	पिशङ्गयपि	४२
प्रदेश	निदेश	४२
कंचित्किञ्चिन	किञ्चित्किञ्चन	४३
कञ्चित्	किञ्चित्	४३
किञ्चिन	कञ्चिन	४३
त्तणो	त्तणो	४३
त्यगातन	न्यगातन	४३
देपानां	देवानां	४५
प्रस्तरोत्पल	प्रस्तरोपल	४६
उत्पल	उपल	४६
पृगुण	प्रगुण	५६
वृध्ने	व्रध्ने	६२

७० पेज में ४५ वी गाथा के पूर्वार्द्ध का ऐसा अर्थ है कि जिन और सिद्ध को परमात्मा तथा अर्हन्त, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय और साधु इन पांचों को परमेष्ठी कहते है ।

॥ श्री वीतरागाय नमः ॥

कविशिरोमणि श्रीमद्धनञ्जयविरचित-

नाम-माला

का

सरलहिन्दी-अनुवाद ।

मङ्गलाचरण ।

तन्नमामि परंज्योति-रवाङ्मनसगोचरम् ।
उन्मूलयत्यविद्यां यद्, विद्यामुन्मीलयत्यपि ॥१॥

भाषार्थ—मैं (धनञ्जय) उस परज्योति—केवलज्ञान—को नमस्कार करता हूं, जो वचनसे अकथनीय और मनसे अचिन्त्य है तथा जो ज्ञानको प्रगट करती है और अज्ञानको जडसे उखाड़ देती है ॥ १ ॥

भावार्थ—परंज्योति-केवलज्ञान-का माहात्म्य अद्भुतही है ।

द्वयं द्वितयमुभयं, यमलं युगलं युगं ।
युग्मं द्वंद्वं यमं द्वैतं, पादयोः पातु जैनयोः ॥ २ ॥

भाषार्थ—द्वय, द्वितय, उभय, यमल, युगल, युग, युग्म, द्वंद्व, यम, और द्वैत (न०) ये सब युगलके नाम हैं वे जिनेन्द्र देवके चरणोंके युगल (जोड़) मेरी और आपकी रक्षा करें ॥ २॥

ऋषिर्यतिर्मुनिर्भिक्षु-स्तापसः संयतो व्रती ।
तपस्वी संयमी योगी, वर्णी साधुश्च पातु वः॥३॥

भाषार्थ—ऋषि, यति, मुनि, भिक्षु, तापस, संयत, व्रतिन्, तपस्विन्, संयमिन्, योगिन्, वर्णिन् और साधु (पु०) ये सब मुनिके नाम है वे मुनि आपकी रक्षा करें ॥ ३ ॥

दीक्षितं मौढ्यं शिष्यं च, तमवन्तेवासिनं विदुः ।
कृतान्तागमसिद्धान्त-ग्रंथाः शास्त्रमतः परम् ॥४॥

भाषार्थ—दीक्षित, मौढ्य, शिष्य और अन्तेवासिन् (पु०) ये चार छात्र (विद्यार्थी) के नाम है । कृतान्त, आगम, सिद्धान्त, ग्रन्थ (पु०) और शास्त्र (न०) ये सब शास्त्रके नाम हैं आगे पृथ्वी के नाम कहते है ॥ ४ ॥

भूमिर्भूः पृथिवी पृथ्वी, गव्हरी मेदिनी मही ।
धरा वसुमती धात्री, क्षमा विश्वंभराऽवनिः॥५॥
वसुधा धरणी क्षोणी, क्ष्मा धरित्री क्षितिश्च कुः ।
कुम्भिनीलोर्वरा चोर्वी, जगती गौर्वसुन्धरा॥६॥

भाषार्थ—भूमि, भू, पृथिवी, पृथ्वी, गव्हरी, मेदिनी,

मही, धरा, वसुमती, धात्री, क्षमा, विश्वंभरा, अवनि, वसुधा, धरणी, क्षोणी, क्ष्मा, धरित्री, क्षिति, कु, कुम्भिनी, इला, उर्वरा, उर्वी, जगती, गो, वसुन्धरा, (स्त्री) ये सब पृथिवीके नाम हैं ॥ ५ ॥ ६ ॥

तत्पर्याय-धरः शैलः, तत्पर्याय-पतिर्नृपः ।
तत्पर्याय-रुहो वृक्षः, शब्दमन्यञ्च योजयेत् ॥ ७ ॥

भाषार्थ—इन पृथिवीके नामोंके आगे 'धर,, शब्द जोड देनेसे पर्वतके और 'पति, शब्द जोड देनेसे राजाके तथा 'रुह' शब्द जोडदेनेसे वृक्षके नाम हो जाते है जैसे भूमिधर, भूधर आदि, भूमिपति, भूपति आदि और भूमिरुह, भूरुह आदि। विशेष बात यह है कि धर पति और रुह, इनके समान अर्थवाले भृत्, ध्र तथा स्वामी, पाल आदि शब्दोंको जोडनेसे भी भूधर (पर्वत) आदिके नाम बन जाते है जैसे महीध्र, महीभृत् आदि और भूस्वामी, भूपाल आदि ॥ ७ ॥

दरीभृदचलः शृङ्गी, पर्वतः सानुमान्गिरिः ।
नगः शिलोच्चयोऽद्रिश्च, शिखरी त्रिककुन्मरुत् ॥ ८ ॥

भाषार्थ—दरीभृत्, अचल, शृङ्गिन्, पर्वत, सानुमत्, गिरि, नग, शिलोच्चय, अद्रि, शिखरिन्, त्रिककुत् और मरुत् (पु०) ये सब पर्वतके नाम है ॥ ८ ॥

प्रस्थं पार्श्वं तटं सानु-र्मेखलोपत्यका तटी ।
नितम्बमन्तो दन्तश्च, तद्वानपि गिरिः स्मृतः ॥ ९ ॥

भाषार्थ—प्रस्थ (पु० न०) पार्श्व (न०) तट (तीन) सानु (पु० न०)मेखला, उपत्यका, तटी (स्त्री) नितम्ब (पु०न०) अन्त

और दन्त (पु०) इन शब्दोंके आगे मतुप् प्रत्यय जोड़ देनेसे पर्वतके नाम हो जाते है जैसे प्रस्थवत्, पार्श्ववत्, तटवत्, सानुमत् इत्यादि ।

भावार्थ—प्रस्थ आदि शब्दोंके साथ मतुप् प्रत्यय जोड़ने से पर्वतके नाम हो जाते है वह मतुप् प्रत्यय यदि अकारान्त शब्दोंसे आगे होगा तो 'म, के स्थानमें 'व, हो जायगा इसलिए 'वत्' रहेगा और इकारान्त उकारान्त शब्दोंसे आगे होगा तो 'म' का म ही रहेगा तब सानुमत् इस तरहके रूप होंग ॥ ६ ॥

राजाऽधिपः पतिः स्वामी, नाथः परिवृढः प्रभुः ।
ईश्वरो विभुरीशानो, भर्तेन्द्र इन ईशिता ॥ १०॥

भावार्थ—राजन् अधिप, पति, स्वामिन्, नाथ, परिवृढ. प्रभु, ईश्वर, विभु, ईशान, भर्तृ, इन्द्र, इन, ईशितृ, पु०) ये सब नाम राजाके है ॥ १० ॥

अनोकुहस्तरुः शाखी, विटपी फलिनो नगः ।
द्रुमोऽह्रिपः फलेग्राही, पादपोऽगो वनस्पतिः ॥ ११॥

भावार्थ—अनोकुह, तरु, शाखिन्, विटपिन्, फलिन, नग, द्रूम अह्रिप, फलेग्राहिन्, पादप, अग और वनस्पति (पु०) ये सब वृक्ष (पेड़) के नाम है ॥ ११ ॥

तत्पाद्यंय-चरो ज्ञेयो, हरिर्वलिमुखः कपिः ।
वानरो प्लवगश्चैव, गोलाङ्गूलोऽथ मर्कटः ॥ १२॥

भावार्थ—इन वृक्षके नामोंके आगे 'चर, शब्द जोड़ देनेसे वन्दरके नाम हो जाते है जैसे अनोकुहचर, तरुचर, आदि (पु०)

तथा हरि, वलिमुख, कपि, वानर, प्लवग, गोलांगूल और मर्कट (पु०) ये भी वानर (बन्दर) के नाम हैं ॥ १२ ॥

विपिनं गहनं कक्ष-मरण्यं काननं वनं।
कांतारमटवी दुर्गं, तच्चरः स्याद्वनेचरः ॥ १३ ॥

भाषार्थ—विपिन, गहन कक्ष, अरण्य, कानन, वन, कातार (न०) अटवी (स्त्री) दुर्ग (न०) ये सब वनके नाम है इनके आगे 'चर, शब्द जोड देनेसे वनचर (भील) के नाम हो जाते है ॥१३॥

पुलिन्दः शबरो दस्यु-र्निषादो व्याधलुब्धकौ।
धानुष्कोऽथ किरातश्च सोऽरण्यानीचरः स्मृतः १४

भाषार्थ—पुलिन्द, शबर, दस्यु, निषाद, व्याध, लुब्धक, धानुष्क और किरात (पु०) ये सब अरण्यानीचर (भील) क नाम है ॥१४॥

वार्वारि कं पयोऽम्भोऽम्बु, पाथोर्णः सलिलं जलम्।
शरं वनं कुशं नीरं, तोयं जीवनमाप्विषम्॥१५॥

भाषार्थ—वार्, वारि, क, पयस्, अम्भस्, अम्बु, पाथस्, अर्णस्, सलिल, जल, शर, वन, कुश, नीर, तोय, जीवन, (न०) अप् (स्त्री) विष (न०) ये सब जल (पानी) के नाम हैं ॥ १५ ॥

तत्पर्याय-चरो मत्स्य-स्तत्पर्याय-प्रदो घनः।
तत्पर्यायोद्भवं पद्मं, तत्पर्याय-धरोऽम्बुधिः ॥१६॥

भाषार्थ—इन पानीके नामोंके आगे 'चर, शब्द जोड़देनेसे मत्स्य (मछली) के, 'प्रद, शब्द जोड देनेसे मेघके, उद्भव, शब्दके जोड़देनेसे कमलके और 'धर, शब्दके जोड़नेसे समुद्रके नाम हो जाते है जैसे

जलचर आदि (पु०), जलप्रद आदि (पु०), जलोद्भव आदि (पु० न०) और जलधर आदि (पु०) होने है ॥ १६ ॥

पृथुरोमा षडक्षीणो, यादो वैशारिणो झषः ।
विशारी सफरो मीनः,पाठीनो निमिषस्तिमिः ॥१७॥

भाषार्थ—पृथुरोमन्, षडक्षीण (पु०), यादस् (न०) वैशारिण, झष, विशारिन्, सफर, मीन, पाठीन, निमिष, और तिमि (पु०) ये सब मछली के नाम है ॥ १७ ॥

घनाघनो घनो मेघो, जीमूतोऽभ्रं बलाहकः ।
पर्जन्यो मुदिरोऽनभ्राट्,शंपा सौदामिनीतडित्॥१८॥
आकालिकी क्षणरुचि-र्विद्युत्तत्पतिरम्बुदः ।
निर्घातमशनिर्वज्र-मुल्काशब्दं च योजयेत् ॥१९॥

भाषार्थ—घनाघन, घन, मेघ, जीमूत, (पु०) अभ्र (न०) बलाहक, पर्जन्य, मुदिर और अनभ्राज् (पु०) ये सब मेघके नाम है तथा शंपा, सौदामिनी, तडित्, आकालिकी, क्षणरुचि, और विद्युत् (स्त्री) इन बिजलीके नामोंके आगे 'पति' शब्द जोड़ देनेसे मेघके नाम बन जाते है इसी तरह निर्घात (न०) अशनि (स्त्री पु०) वज्र (पु०न०) इन वज्रके नामोके आगे तथा उल्का (गाज) शब्दके आगे पति शब्दको जोड़ देनेसे भी मेघके नाम बन जाते है ॥ १८॥१९॥

परिषत्कर्दमः पंक-स्तज्जं तामरसं विदुः ।
कमलं नलिनं पद्मं, सरोजं सरसीरुहम् ॥ २० ॥
खरदंडं कोकनदं, पुण्डरीकं महोत्पलम् ।
इन्दीवरंचारविन्दं, शतपत्रम् च पुष्करम् ॥ २१ ॥

स्यादुत्पलं कुवलय-मथ नीलाम्बुजन्म च ।
इन्दीवरं च नीलेऽस्मिन्, सिते कुमुदकैरवे ॥२२॥

भाषार्थ—परिषत्, कर्दम, पंक (पु०) ये तीन कीचड़के नाम है इन के आगे 'ज' जोड देनेसे तामरस कमल (न०) के नाम बन जाते हैं जैसे पारिषज्ज, कर्दमज, पंकज और कमल, नलिन, पद्म, सरोज, सरसीरुह, खरदंड, कोकनद, पुण्डरीक, महोत्पल, इन्दीवर, अरविन्द, शतपत्र, पुष्कर, उत्पल और कुवलय (पु०न०) ये सब सामान्य कमलके नाम है और नीलाम्बुजन्मन्, इन्दीवर (न०) ये दो नील कमलके तथा कुमुद और केरव (न०) श्वेत कमलके नाम हैं ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥

व्रतती विशनी ज्ञेया, व्रतती वल्लरी लता ।
वल्लीनामानि योज्यानि, वारिधिर्वर्ण्यतेऽधुना॥२३॥

भाषार्थ—इन कमलके नामोंके आगे मतुप् प्रत्यय जोड़ देनेसे कमलवती आदि विशनी-कमलिनी-(स्त्री) के नाम बन जाते हैं और व्रतति, व्रतती वल्लरी और लता (स्त्री) इन लताके नामोंको जोड़देने सेभी कमलिनी के नाम बन जाते है जैसे कमलव्रतति, कमलवल्लरी और कमललता । अब समुद्रके नामोंका वर्णन करते है ॥ २३ ॥

स्रोतस्विनी धुनी सिंधुः, स्रवंती निम्नगाऽपगा ।
नदी नदो द्विरेफश्च, सरिन्नाम्नी तरंगिणी ॥ २४ ॥
तत्पतिश्च भवत्याब्धिः, पारावारोऽमृतोद्भवः ।
अपारवारऽकूपारो, रत्नमीनाभिधाकरः ॥ २५॥

समुद्रो वारिराशिश्च, सरस्वान्सागरोऽर्णवः ।
सीमोपकंठं तीरं च, पारंरोधोऽवधिस्तटम् ॥ २६ ॥

भापार्थ—स्रोतस्विनी, धुनी, सिन्धु, स्रवन्ती, निम्नगा, आपगा, नदी (स्त्री) नद, द्विरेफ (पु०) सरित्, तरंगिणी (स्त्री) ये सब नदीके नाम है इनके आगे 'पति, शब्द जोडदेनेसे समुद्रके नाम बन जाते है जैसे स्रोतस्विनीपति आदि तथा अब्धि, पारावार, अमृतोद्भव, अपारवार्, अकूपार, रत्नाकर, मीनाकर, समुद्र, वारि-राशि, सरस्वत्, सागर और अर्णव (पु०) ये सब समुद्रके नाम है और सीमोपकण्ठ, तीर, पार, रोधस् (न०) अवधि (पु०) तट (तीन) ये सब तीरके नाम हैं ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥

भंगस्तरङ्गकल्लोलौ, वीचिरुत्कलिकावलिः ।
पाली वेला तटोच्छ्वासो, विभ्रमोयमुदन्वतः॥ २७॥

भापार्थ—भंग, तरंग, कल्लोल, (पु०) वीचि, उत्कलिका, और आवलि (स्त्री) ये सब लहरके नाम है और पाली, वेला (स्त्री तटोच्छ्वास (पु०) ये तीन समुद्र के विभ्रम के नाम है ॥

भावार्थ—जलकी भौरको विभ्रम कहते है अर्थात् मण्डल के आकार जलके घूमनेको विभ्रम कहते हैं ॥ २७ ॥

मनुष्यो मानुषो मर्त्यो, मनुजो मानवो नरः ।
ना पुमान् पुरुषो गोधो, धवः स्यात्तत्पतिर्नृपः॥ २८॥

भापार्थ—मनुष्य, मानुप, मर्त्य, मनुज, मानव, नर, नृ, पुमस्, पुरुप, गोध और धव (पु०) ये सब पुरुपके नाम हैं इनके आगे

'पति' शब्द जोड देनेसे राजाके नाम बन जाते है जैसे मनुष्यपति, नृपति, नरपति आदि (पु०) ॥ २८ ॥

भृत्योऽथ भृतकः पत्तिः, पदातिः पदगोऽनुगः।
भटोऽनुजीव्यनुचरः, शस्त्रजीवी च किंकरः ॥२९॥

भाषार्थ—भृत्य, भृतक, पत्ति, पदाति, पदग, अनुग, भट, अनुजीविन्, अनुचर, शस्त्रजीविन्, किङ्कर (पु०) ये सब नौकरके नाम है ॥२९॥

स्त्री नारी वनिता मुग्धा, भामिनी भीरुरङ्गना।
ललना कामिनी योषिद्, योषा सीमन्तिनी वधूः॥३०
नितम्बिन्यऽबला बाला, कामुकी वामलोचना।
भामा तनूदरी रामा, सुन्दरी युवतिश्चला ॥३१॥

भाषार्थ—स्त्री, नारी, वनिता, मुग्धा, भामिनी, भीरु, अंगना, ललना, कामिनी, योषित्, योषा, सीमन्तिनी, वधू, नितम्बिनी, अबला, बाला, कामुकी, वामलोचना, भामा, तनूदरी, रामा, सुन्दरी, युवति और चला, (स्त्री) ये सब सामान्य स्त्रीके नाम है ॥३०॥३१॥

भार्या जाया जनिः कुल्या, कलत्रं गेहिनी गृहम्।
महिला मानिनी पत्नी, तथा दाराः पुरन्ध्रयः ॥३२॥

भाषार्थ भार्या, जाया, जनि, कुल्या, (स्त्री) कलत्र (न०) गेहिनी, (स्त्री) गृह (न०) महिला, मानिनी, पत्नी (स्त्री) और दारा (पु०) ये सब अपनी विवाहिता स्त्रीके नाम है और पुरन्ध्री (स्त्री) यह पुत्र और पतिवाली स्त्रीका नाम है ॥ ३२ ॥

वल्लभा प्रेयसी प्रेष्ठा, रमणी दयिता प्रिया ।
इष्टा च प्रमदा कान्ता, चण्डी प्रणयिनी तथा ॥३३॥

भाषार्थ—वल्लभा, प्रेयसी, प्रेष्ठा, रमणी, दयिता, प्रिया, इष्टा, प्रमदा, कान्ता, चण्डी और प्रणयिनी (स्त्री) ये सब प्यारी स्त्रीके नाम हैं ॥ ३३ ॥

सती पतिव्रता साध्वी, पतिव्रत्येकपत्न्यपि ।
मनास्विनी भवत्यार्या, विपरीता निरूप्यते ॥ ३४ ॥

भाषार्थ—सती, पतिव्रता, साध्वी, पतिव्रती, एकपत्नी, मनस्विनी, आर्या (स्त्री) ये सब पतिव्रता (पतिभक्ता) स्त्रीके नाम हैं अब कुलटा (व्यभिचारिणी) स्त्रीके नाम कहते हैं ॥ ३४ ॥

बन्धकी कुलटा मुक्ता, पुनर्भूः पुंश्चली खला ।
स्पर्शाभिसारिका दूती, स्वैरिणी संफली तथा ॥३५

भाषार्थ—बन्धकी, कुलटा, मुक्ता, पुनर्भू, पुंश्चली, खला, स्पर्शा, अभिसारिका, दूती, स्वैरिणी, संफली (स्त्री) ये सब व्यभिचारिणी स्त्रीके नाम है ॥ ३५ ॥

गणिका लञ्जिका वेश्या, रूपाजीवा विलासिनी ।
पण्यस्त्री दारिका दासी, कामुकी सर्ववल्लभा॥३६॥

भाषार्थ—गणिका, लञ्जिका, वेश्या, रूपाजीवा, विलासिनी, पण्यस्त्री, दारिका, दासी, कामुकी, और सर्ववल्लभा (स्त्री) ये सब वेश्याके नाम हैं ॥ ३६ ॥

कान्तेष्टौ दयितः प्रीतः, प्रियः कामी च कामुकः।
वल्लभोऽसुपतिः प्रेयान्, विटश्च रमणो वरः ॥३७॥

भाषार्थ—कान्त, इष्ट, दायित, प्रीत, प्रिय, कामिन्, कामुक, वल्लभ, असुपति, प्रेयस्, विट, रमण, वर (पु०) ये सब पतिके नाम हैं ॥ ३७॥

सवित्री जननी माता, जनकः सविता पिता।
देहोऽपघनकायाङ्गं, वपुः सहननं तनुः ॥ ३८ ॥
कलेवरं शरीरं च, मूर्त्तिरस्माद्भवः सुतः।
पुत्रः सूनुरपत्यं च, तुक् तोकं चात्मजः प्रजाः॥३९॥
उद्वहस्तनयः पोतो, दारको नन्दनोऽर्भकः।
स्तनन्धयोत्तानशयौ, स्त्रीत्वे दुहितरं विदुः ॥४०॥

भाषार्थ—सवित्री, जननी, मातृ (स्त्री) ये तीन नाम माताके है और जनक, सवितृ और पितृ (पु०) ये तीन पिताके नाम है देह (पु०न०) अपघन, काय (पु०) अग, वपुस्, सहनन (न०) तनु (स्त्री) कलेवर, शरीर, (न०) मूर्ति (स्त्री) ये सब शरीरके नाम है इनके आगे 'भव' शब्द लगा देनेसे पुत्रके नाम हो जाते है और सुत, पुत्र, सुनु (पु०) अपत्य (न०) तुक् (पु०) तोक (न०) आत्मज (पु०) प्रजा (स्त्री) उद्वह, तनय, पोत, दारक, नन्दन, अर्भक, स्तनन्धय, उत्तानशय (पु०) ये सब पुत्रके नाम है इनके आगे स्त्रीलिंग बोधक प्रत्यय जोड़ देनेसे दुहितृ (स्त्री) अर्थात् पुत्रीके नाम बन जाते है परन्तु अपत्य और तोक ये दो शब्द समानरूपमें रहतेहुए ही पुत्र और पुत्री दोनोंके बोधक होते है ॥ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥

वयस्याऽऽली सहचरी, सध्रीची सवयाः सखी ।
आली विवर्जितं मित्रं, सम्बन्धो मित्रयुक् सुहृत् ॥४१॥

भावार्थ—वयस्या, आली, सहचरी, सध्रीची, सवयस्, सखी (स्त्री) ये सब सखीके नाम है इनमें से आली शब्दको छोडकर स्त्री बोधक प्रत्यय निकाल देनेसे शेष शब्द मित्रके वाचक बन जाते है और वे पुल्लिग होते है । तथा मित्र (न०) सम्बन्ध, मित्रयुज्, सुहृत् (पु०) ये सब मित्रके नाम है ॥ ४१ ॥

सहकृत्वा सहकारी, सहायः समवायिकः ।
सनाभिः सगोत्रो बन्धुः, सोदर्यो वरजोऽनुजः॥४२
कनीयानग्रजो ज्येष्ठो, भ्रातृजानी स्वसाऽनुजा ।
भर्तुः स्वसा ननान्दा स्यान्मातुलानी प्रियाम्बिका४३

भाषार्थ—सहकृत्वन्, सहकारिन्, सहाय, सामवायिक, (पु०) ये सब सहायकके नाम है और सनाभि, सगोत्र, बन्धु, सोदर्य, (पुं०) ये चार सगे भाई (सहोदर) के नाम हैं और अवरज, अनुज और कनीयस् (पुं०) ये तीन अपने से छोटे भाईके नाम हैं, अग्रज, ज्येष्ठ (पु०) ये दो बडे भाईके नाम है । भ्रातृजानी और स्वसृ (स्त्री) ये दो बहिनके नाम है । तथा अनुजा (स्त्री) छोटी बहिनका नाम है ननांद (स्त्री) यह नाम पतिकी बहिन का है और मातुलानी, प्रियाम्बिका (स्त्री) ये दो नाम मामी अर्थात् मामाकी स्त्रीके है ॥ ४२ ॥ ४३ ॥

वैर्यरातिरमित्रोऽरि-र्द्विद् सपत्नो द्विषद्रिपुः ।
असेव्यो दुर्जनः शत्रु-र्दुष्टो द्वेषी खलोऽहितः ॥४४॥

भाषार्थ—वैरिन्, अराति, अमित्र, अरि, द्विष्, सपत्न, द्विषत् असेव्य, दुर्जन, शत्रु, दुष्ट, द्वेषिन्, खल, और अहित (पु०) ये सब शत्रुके नाम है॥ ४४ ॥

दीधितिर्भानुरुस्रोंशु-र्गभस्तिः किरणः करः।
पादो रुचिर्मरीचिर्भा-स्तेजोऽर्चिर्गौर्द्युतिः प्रभा॥४५॥
दीप्तिर्ज्योतिर्महो धाम, रश्मिरूर्जो विभावसुः।
शीतोष्णप्रायपूर्वत्वे, तद्वन्ताविन्दुभास्करौ ॥४६॥

भाषार्थ—दीधिति (स्त्री) भानु, उस्र, अंशु, गभस्ति, किरण, कर, पाद (पुं०) रुचि (स्त्री) मरीचि (स्त्री. पु०) भास् (स्त्री) तेजस्, अर्चिष् (न०) गो, (पु० स्त्री) द्युति, प्रभा, दीप्ति, (स्त्री) ज्योतिष्, महस् धामन्, (न०) रश्मि (पु०) ऊर्जस् (न०) विभावसु (पुं०) ये सब किरणके नाम है। इन नामोंके पीछे शीत और आगे मतुप् प्रत्यय जोडदेनेसे चन्द्रमाके तथा पीछे उष्ण और आगे मतुप् प्रत्यय जोड़देनेसे सूर्यके नाम बन जाते है, जैसे शीतदीधितिमत् और उष्णदीधितिमत् ॥ ४५ ॥ ४६ ॥

शशी विधुः सुधासूतिः, कौमुदी कुमुदप्रियः।
कलाभृच्चन्द्रमाश्चन्द्रः,कान्तिमानौषधीश्वरः॥४७॥

भाषार्थ—शशिन्, विधु, सुधासूति, कौमुदिन्, कुमुदप्रिय, कलाभृत् चन्द्रमस्, चन्द्र, कान्तिमत् और औषधीश्वर (पु.) ये सब नाम चन्द्रमा के है ॥४७॥

उडूनि भानि तारर्क्षं, नक्षत्रं तत्पति निशा।
क्षणदा रजनी नक्तं, दोषा श्यामा क्षपाकरः ॥४८॥

भावार्थ—उडु भ (न०) तारा (स्त्री) ऋच, नक्षत्र (न०) ये सब नक्षत्रके नाम हैं। इनके आगे 'पति, जोड़देनेसे चन्द्रमा के नाम बन जाते है, जैसे नक्षत्रपति आदि तथा निशा, क्षणदा, रजनी (स्त्री) नक्त (अव्यय) दोषा, श्यामा, क्षपा (स्त्री) ये सब रात्रिके नाम हैं। इनके आगे 'कर, जोड़देनेसे भी चन्द्रमा के नाम बन जाते हैं, जैसे निशाकर, क्षपाकर आदि ॥ ४८ ॥

तरणिस्तपनो भानु-र्ब्रध्नः पूषाऽर्यमा रविः।
तिग्मः पतंगो द्युमणि-र्मार्तण्डोऽर्को ग्रहाधिपः॥४९॥
इनः सूर्यस्तमोध्वान्त-स्तिमिरारिर्विरोचनः।
दिनं दिवाह्न दिवसो, वासरस्तत्करश्च सः ॥५०॥
चक्रवाकाब्जपर्याय-बन्धुः कुमुदविप्रियः।
यमुनायमकानीन-जनकः सविता मतः ॥ ५१ ॥

भावार्थ—तरणि, तपन, भानु, ब्रध्न, पूषन्, अर्यमन्, रवि, तिग्म, पतङ्ग, द्युमणि, मार्तण्ड, अर्क, ग्रहाधिप, इन, सूर्य, तमोरि, ध्वान्तारि, तिमिरारि और विरोचन (पुं०) ये सब सूर्यके नाम है। दिन (न०) दिवा (अव्यय) अहन् (न०) दिवस, वासर (पु०) इन दिनके नामोंके आगे 'कर, जोड देनेसे भी दिनकर आदि सूर्यके नाम हो जाते है कोक, चक्र, चक्रवाक और रथाग (पु०) इन चकवे के नामों के आगे और पीछे लिखे हुये कमलके नामोंके आगे बन्धु, शब्द जोड़ देने से भी सूर्यके नाम बन जाते है, जैसे कोकबन्धु, चक्रबन्धु आदि, और कमलबन्धु आदि तथा कुमुदविप्रिय (पु०) तथा यमुनाजनक, यमजनक कानीनजनक (पु०) ये सवितृ (सूर्य) के नाम है ॥४९॥५०॥५१॥

वाहोऽश्वस्तुरगो वाजी, हयो धुर्यस्तुरंगमः ।
सप्तिरर्वा हरी रथ्यः, सप्ताद्यश्वो मयूखवान् ॥५२॥

भाषार्थ—वाह, अश्व, तुरग, वाजिन्, हय, धुर्य, तुरगम, सप्ति, अर्वन्, हरि, रथ्य (पुं०) ये सब घोड़ेके नाम हैं। इनके पीछे 'सप्त, शब्द जोड़देनेसे मयूखवत् (सूर्य) के नाम होजाते है, जैसे सप्तवाह सप्ताश्व (पु०) आदि ॥ ५२ ॥

खं विहायो वियद्व्योम, गगनाकाशमम्बरम् ।
द्यौर्नभोऽभ्राऽन्तरित्तं च, मेघवायु-पथोप्यथ ॥५३॥

भाषार्थ—ख (न०) विहायस् (पु०न०) वियत्, व्योमन्, गगन, आकाश, अम्बर (न०) द्युस् (दिव्) नभस्, अभ्र, अन्तरित्त (न०) मेघपथ और वायुपथ (पुं०) ये सब आकाशके नाम है ॥ ५३ ॥

तच्चरः खेचरस्तद्गः, पत्ती पत्री पतत्र्यपि ।
शकुन्तिः शकुनिर्विश्च, पतंगो विष्किरो वयः॥ ५४॥

भाषार्थ—इन आकाशके नामोंके साथ 'चर' शब्दको जोड़देनेसे खेचर, विहायश्चर आदि विद्याधरके नाम बन जाते है और 'ग' शब्द जोड़देनेसे खग वगैरह तथा पत्तिन्, पत्रिन्, पतत्रिन्, शकुन्ति, शकुनि, वि, पतग, विष्किर, (पुं०) वयस् (न०) ये सब पक्षीके नाम है ॥ ५४ ॥

जाङ्गलं पिशितं मांसं, पलं पेशी च तत्प्रियः ।
यातुधानस्तथा रत्तो, रात्र्यादि-चर इष्यते ॥५५॥

भाषार्थ— जांगल, पिशित, मास, पल (न०) पेशी (स्त्री) ये सब

मांसके नाम हैं। इनके आगे 'प्रिय, शब्द जोडदेनेसे मांसप्रिय जांगलप्रिय आदि, और यातुधान (पुं०) रक्षस् (न०) तथा रात्रिके नामोंके आगे 'चर, जोड़देनेसे रात्रिचर, निशाचर आदि भी राक्षस के नाम बन जाते है ॥ ५५ ॥

सुतोऽदितेस्तडित्वान्वा, सेन्द्रो देवः सुरोऽमरः।
स्वर्द्यौःस्वर्गोऽथ नाकश्च, तद्वासस्त्रिदशो मतः ५६

भावार्थ—अदितिसुत, तडित्वत्, सेन्द्र, देव, सुर, अमर, (पुं०) ये देवके नाम हैं और स्वर् (अव्यय) द्युस्(स्त्री).नाक (पु.) इन स्वर्गके नामों के आगे वास,शब्द जोडदेनेसे भी देवके नाम होजाते है जैसे स्वर्वास, इत्यादि ॥ ५६ ॥

तत्पतिः शक्र इन्द्रश्च, सुनाशीरः शतक्रतुः।
प्राचीनबर्हिः सूत्रामा, वज्री चाखण्डलो हरिः ॥५७
शत्रुर्वलस्य गोत्रस्य, पाकस्य नमुचेरपि।
वृत्रहा च सहस्राक्षो, गीर्वाणेशः पुरन्दरः ॥५८॥
विडौजाश्चाप्सरोनाथो, वासवो हरिवाहनः।
मरुतश्च मरुत्वांश्च, वृषा चैरावणाधिपः ॥ ५९ ॥
शतमन्युस्तुराषाट् च, पुरुहूतश्च कौशिकः।
शक्रंदनोऽथ मघवान्पुलोमारिर्मरुत्सखः ॥६०॥

भावार्थ—देवके नामोंके आगे पति, शब्द जोड़देनसे इन्द्रके नाम बन जाते हैं जैसे त्रिदशपति, देवपति आदि तथा शक्र, इन्द्र, सुनाशीर, शतक्रतु, प्राचीनबर्हि, सुत्रामन, वज्रिन्, आखण्डल, हरि,

वलशत्रु, गोत्रशत्रु, पाकशत्रु, नमुचिशत्रु, वृत्रहन्, सहस्राक्ष गीर्वाणेश, पुरन्दर, विडौजस्, अप्सरोनाथ, वासव, हरिवाहन, मरुत, मरुत्वत्, वृषन्, ऐरावणाधिप, शतमन्यु, तुराषाह्, पुरुहूत, कौशिक, शङ्क्रन्दन, मघवत्, पुलोमारि, और मरुत्सख (पु०) ये सब इन्द्र के नाम हैं ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥

काष्ठा ककुब् दिगाशा च, दक्षकन्या तथा हरित् ।
तत्पर्यायपरं योज्यं, प्राज्ञैः पालगजाम्बरम् ॥ ६१ ॥

भाषार्थ—काष्ठा, ककुप्, दिश्, आशा, दक्षकन्या, और हरित् (स्त्री) ये सब दिशाओं के नाम है इनके आगे पाल, शब्द जोड़ देनेसे काष्ठापाल दिक्पाल आदि दिक्पालके, और 'गज' शब्द जोड़ देनेसे दिग्गज आदि दिग्गज के तथा अम्बर, शब्द जोड़ देने से दिगम्बर, काष्ठाम्बर आदि दिगम्बर (मुनि) के नाम हो जाते है वे सब पुंल्लिग होते है ॥ ६१ ॥

पवनः पवमानश्च, वायुर्वातोऽनिलोमरुत् ।
समीरणो गन्धवाहः, श्वसनश्च सदागतिः ॥६२॥
नभस्वान् मातरिश्वा च, वरेण्युर्जवनश्चलः ।
प्रभञ्जनोऽस्य पर्याय-पुत्रौ, भीमाञ्जनात्मजौ॥६३॥

भाषार्थ—पवन, पवमान, वायु, वात, अनिल, मरुत्, समीरण, गन्धवाह, श्वसन, सदागति, नभस्वत्, मातरिश्वन्, वरेण्यु, जवन, चल और प्रभञ्जन (पु.) ये सब वायु (हवा) के नाम हैं इनके आगे 'पुत्र' शब्द जोड़ देनेसे पवनपुत्र आदि भीम तथ हनूमानके नाम हो जाते है और वे पुंल्लिग होते है॥६२॥६३॥

तत्सखोऽग्निः शिखी वन्हिः, पावकश्चाशुशुक्षणिः।
हिरण्यरेताः सप्तार्चि-र्जातवेदास्तनूनपात् ॥६४॥
स्वाहापतिर्हुताशश्च, ज्वलनो दहनोऽनलः।
वैश्वानरः कृशानुश्च, रोहिताश्वो विभावसुः॥६५॥
वृषाकपिः समीगर्भो, हव्यवाहो हुताशनः।
तदादि-सूनुः सेनानीः, स्कन्दश्च शिखिवाहनः॥६६॥
कार्तिकेयो विशाखश्च, कुमारः षण्मुखो गुहः।
शक्तिमान् क्रौञ्चभेदी च, स्वामी शरवणोद्भवः॥६७॥

भावार्थ—पवनके नामांके आगे 'सख' शब्द, जोड़ देने से पवनसख आदि और अग्नि, शिखिन्, वन्हि, पावक, आशुशुक्षणि, हिरण्यरेतस्, (पु०) सप्तार्चिस् (न०) जातवेदस्, तनूनपात् स्वाहापति, हुताश, ज्वलन, दहन, अनल, वैश्वानर, कृशानु, रोहिताश्व, विभावसु, वृषाकपि, समीगर्भ, हव्यवाह, और हुताशन (पु०) ये सब अग्निके नाम है इनके आगे 'सुनु' शब्दके जोड़ देनेसे अग्निसुनु आदि तथा सेनानी, स्कंद, शिखिवाहन, कार्तिकेय, विशाख, कुमार षण्मुख, गुह, शक्तिमत्, क्रौञ्चभेदिन्, स्वामिन्, और शरवणोद्भव (पु०) ये सब कार्तिकेयके नाम हैं ॥ ६४ ॥ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥

तत्पिता शंकरः शम्भुः, शिवः स्थाणुर्महेश्वरः।
त्र्यम्बको धूर्जटिः शर्वः, पिनाकी प्रमथाधिपः॥६८॥
त्रिपुरारिर्विशालाक्षो, गिरिशो नीललोहितः।
रुद्रेन्दुमौलियज्ञारि-स्त्रिनेत्रो वृषभध्वजः ॥ ६९ ॥

उग्रः शूली कपाली च, शिपिविष्टो भवो हरः ।
उमापतिर्विरूपाक्षो, विश्वरूपः कपर्द्यपि ॥ ७० ॥

भाषार्थ—कार्तिकेय के नामोंके आगे 'पितृ' शब्द जोड़ देने से सेनानीपितृ आदि महादेवके नाम हो जाते है तथा शंकर, शम्भु, शिव, स्थाणु, महेश्वर, त्र्यम्बक, धूर्जटि, शर्व, पिनाकिन्, प्रमथाधिप, त्रिपुरारि, त्रिशालाक्ष, गिरीश, नीललोहित, रुद्र, इन्दुमौलि, यज्ञारि, त्रिनेत्र, वृषभध्वज, उग्र, शूलिन्, कपालिन्, शिपिविष्ट, भव, हर, उमापति, विरूपाक्ष, विश्वरूप, और कपर्दिन् (पु०) ये भी महादेव के नाम है ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥

भगीरथी त्रिपथगा, जान्हवी हिमवत्सुता ।
मन्दाकिनी द्युपर्याय-धुनी गङ्गा नदीश्वरी ॥ ७१ ॥

भाषार्थ—भागीरथी, त्रिपथगा, जान्हवी, हिमवत्सुता, मंदाकिनी और द्युस (स्वर्ग) के नामोंके आगे 'धुनी' शब्द जोड़ देने से स्वर्धुनी, स्वर्गधुनी, द्युधुनी आदि तथा गंगा, नदीश्वरी, (स्त्री) ये सब गंगा के नाम है, नदीश्वरी के स्थान में नदीश्वर ऐसा भी पाठ हो सकता है जिससे यह अर्थ निकलता है कि इन गंगाके नामोंके आगे 'ईश्वर' शब्द जोड़ देनेसे भी महादेव के नाम बन जाते है ॥ ७१ ॥

विधिर्वेधा विधाता च, द्रुहिणोऽजश्चतुर्मुखः ।
पद्मपर्याय-योनिश्च, पितामहविरञ्चिनौ ॥ ७२ ॥
हिरण्यगर्भः स्रष्टा च, प्रजापतिस्सहस्रपात् ।
ब्रह्मात्मभूरनन्तात्मा, कस्तत्पुत्रो हि नारदः ॥ ७३ ॥

भाषार्थ—विधि, वेधस्, विधातृ, द्रुहिण, अज, चतुर्मुख, (पु०) ये ब्रह्माके नाम है और कमलके नामोंके आगे 'योनि' शब्द जोड़ देनसे भी कमलयोनि. आदि ब्रह्माके नाम बन जाते हैं तथा पितामह निरञ्चिन, हिरण्यगर्भ, सृष्टृ, प्रजापति, सहस्रपात्, ब्रह्मन्, आत्मभू, अनन्तात्मन्, और क (पु०) ये सब ब्रह्माके नाम है इनके आगे 'पुत्र' शब्द जोड़ देनेसे विधिपुत्र आदि नारदके नाम हो जाते है ॥ ७२ ॥ ७३ ॥

कृष्णो दामोदरो विष्णु-रुपेन्द्रः पुरुषोत्तमः ।
केशवश्च हृषीकेशः, शार्ङ्गी नारायणो हरिः ॥७४॥
केशी मधुर्बलिर्बाणो हिरण्यकशिपुर्मुरः ।
तदादि-सूदनः सौरिः, पद्मनाभोऽप्यधोक्षजः ॥७५॥
गोविन्दो वासुदेवश्च, लक्ष्मीः श्रीर्गोमिनीन्दिरा ।
तत्पतिः शैलभूम्यादि-धरश्चक्रधरस्तथा ॥ ७६ ॥

भाषार्थ—कृष्ण, दामोदर, विष्णु, उपेन्द्र, पुरुषोत्तम, केशव हृषीकेश, शार्ङ्गिन्, नारायण, हरि, केशिन्, मधुसूदन, बलिसूदन, बाणसूदन, हिरण्यकशिपुसूदन, मुरसूदन, सौरि, पद्मनाभ, अधोक्षज, गोविन्द, वासुदेव (पु०) ये सब कृष्णके नाम हैं लक्ष्मी, श्री. गोमिनी, इन्दिरा (स्त्री) ये नाम लक्ष्मी अर्थात् कृष्णकी स्त्री के है इनके आगे 'पति' शब्द जोड़ देनेसे लक्ष्मीपति आदि और पर्वत, भूमि आदिक नामोंके आगे 'धर' शब्द जोड़ देनेसे 'पर्वतधर भूधर' आदि तथा चक्रधर (पु०) ये भी कृष्णके नाम हैं ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥

तत्पुत्रो मन्मथः कामः, सूर्पकारिरनन्यजः।
कायपर्याय-रहितो, मकरो मकरध्वजः॥ ७७॥

भाषार्थ—इन कृष्णाके नामोंके आगे 'पुत्र' शब्द जोड़ देनेसे कृष्णापुत्र आदि तथा मन्मथ, काम, सूर्पकारि, अनन्यज, तथा काय (शरीर) के नामोंके आगे 'रहित' शब्द जोड़ देनेसे काय रहित (अकाय) शरीररहित (अशरीर) आदि और मकर, मकरध्वज (पु०) ये सब कामके नाम हैं॥ ७७॥

शिलीमुखः शरो बाणो, मार्गणो रोपणः कणः।
इषुः काण्डं क्षुरप्रञ्च, नाराचं तोमरं खगः॥७८॥

भाषार्थ—शिलीमुख, शर, बाण, मार्गण, रोपण, कण, इषु, (पु०) काण्ड, क्षुरप्र, नाराच, तोमर, (न०) खग (पु०) ये बाण के नाम हैं॥ ७८॥

कार्मुकं धन्व चापं च, धर्म कोदण्डकं धनुः।
शिलीमुखादेरासनं, तत्कोटिमटनीं विदुः॥ ७९॥

भाषार्थ—कार्मुक, धन्वन्, (न०) चाप, धनुष् (पुं०न०) धर्म, कोदण्डक, और शिलीमुख आदि बाणके नामोंके आगे आसन शब्दके जोड़ देनेसे शिलीमुखासन, शरासन आदि (न०) धनुषके नाम हो जाते है और धनुषकी कोटि (कोण) को अटनी कहते है॥ ७९॥

पुष्पं सुमनसः फुल्लं, लतान्तं प्रसवोद्गमौ।
प्रसूनं कुसुमं शेयं, त, दाद्यस्त्रशरः स्मरः॥ ८०॥

भाषार्थ—पुष्प, सुमनस्; फुल्ल, लतान्त (न०) प्रसव उद्गम (पु०) प्रसून, कुसुम (न०) ये पुष्पके नाम है इनके आगे अस्त्र और शरके नाम जोड़ देनेसे स्मर (काम) के नाम बन जाते है ॥ ८० ॥

स्वान्तमास्वनितं चित्तं, चेतोऽन्तःकरणं मनः ।
हृदयं विशिखाकूतं, मारस्तत्रोद्भवो मतः ॥८१॥

भाषार्थ—स्वान्त, आस्वनित, चित्त, चेतस्, अन्तःकरण, मनस्, हृदय, विशिख, आकूत (न०) ये सब मनके नाम है इनके आगे भव अथवा उद्भव, शब्द जोड़ देनेसे मनोभव स्वान्तभव आदि (पु०) मार (कामदेव) के नाम बन जाते है ॥ ८१ ॥

मौर्वी जीवा गुणो गव्या, ज्याऽलिर्भृङ्गः शिलीमुखः ।
भ्रमरः षट्पदो ज्ञेयो, द्विरेफश्च मधुव्रतः ॥८२॥

भाषार्थ—मौर्वी. जीवा (स्त्री) गुण (पु०) गव्या, ज्या (स्त्री) ये सब धनुषकी डोरीके नाम है अलि, भृंग, शिलीमुख भ्रमर, षट्पद, द्विरेफ, मधुव्रत (पु०) ये सब भ्रमरके नाम है ॥८२॥

मौर्व्यादिप्रान्तमाल्यादि, कंदर्पस्यैक्षवन्धनुः ।
हेतिरस्त्रायुधं शस्त्र-पुष्पाद्यस्त्रः स्मरो मतः ॥८३॥

भाषार्थ—अलि आदि भ्रमरके नामोंके आगे मौर्वी आदि शब्दों को जोड़ देनेसे अलिमौर्वी आदि भी कामके नाम बन जाते हैं कामके धनुषको ऐक्षव (न०) कहते है हेति (स्त्री) अस्त्र, आयुध, शस्त्र (न०) ये चार हथियारके नाम हैं, पुष्पके

नामोंके आगे इन हथियारके नामोंको जोड़ देनेसे पुष्पेषु आदि कामके नाम होजाते है ॥ ८३ ॥

ध्वजा पताका केतुश्च, चिन्हं तद्वैजयन्त्यपि ।
तत्तदन्तो झषाद्यादिः, शम्भोर्विघ्नकरः स्मरः ॥८४॥

भाषार्थ—ध्वजा, पताका (स्त्री) केतु, (पुं०) चिन्ह (न०) वैजयन्ती (स्त्री) ये पाच ध्वजा के नाम हैं, मछलीके नामोंके आगे इनको जोड़ देनेसे झषध्वज, झषकेतु आदि (पु०) और शंकर (महादेव) के नामोके आगे विघ्नकर, शब्द जोड देनेसे शंकर विघ्नकर आदि भी कामके नाम हो जाते है ॥ ८४ ॥

कौक्षेयकोऽसिर्निस्त्रिंशः, कृपाणः करवालकः ।
तरवारिर्मंडलाग्रं, खड्गनामावलिं विदुः ॥८५॥

भाषार्थ—कौक्षेयक, असि, निस्त्रिंश, कृपाण, करवालक, तरवारि, (पु०) मण्डलाग्र (न०) ये सब खड्ग (तलवार) के नाम है ॥ ८५ ॥

अक्षौहिणी बलानीकं, वाहिनी साधनं चमूः ।
ध्वजिनी पृतना सेना, सैन्यं दण्डो वरूथिनी ॥८६॥

भाषार्थ—अक्षौहिणी (स्त्री) बल, अनीक (न०) वाहिनी (स्त्री) साधन (न०) चमू, ध्वजिनी, पृतना, सेना (स्त्री) सैन्य (न०) दण्ड (पु०) वरूथिनी (स्त्री) ये सब सेना के नाम है ॥ ८६ ॥

कदनं समरं युद्धं, संयुगं कलहं रणम् ।
संग्रामं संपरायाजि, संयदाहुर्महाहवम् ॥८७॥

भाषार्थ—कदन, समर, युद्ध, संयुग, कलह, रण, सग्राम (न०) संपराय. आजि (पु०) संयत्, महाहव (न०) ये सब युद्धके नाम है ॥ ८७ ॥

गजो मतङ्गजो हस्ती, वारणोऽनेकपः करी ।
दन्ती स्तम्बेरमः कुम्भी, द्विरदेभमतङ्गमाः ॥ ८८ ॥
शुंडालः सामजो नागो, मातङ्गः पुष्करी द्विपः ।
करेणुः सिन्धुरस्तेषु, यन्ता यान्ता निषाद्यपि ॥८९॥

भापार्थ—गज, मतङ्गज, हस्तिन्, वारण, अनेकप, करिन्, दन्तिन्, स्तम्बेरम, कुम्भिन्, द्विरद, इभ, मतङ्गम, शुंडाल, सामज नाग, मातंङ्ग, पुष्करिन्, द्विप, करेणु, और सिन्धुर (पु०) ये सब हाथी के नाम है इनके आगे यन्तृ, यातृ और निषादिन् (पु०) ये तीन शब्द जोड देने पर गजयन्तृ, गजयातृ और गजनिषादिन् आदि महावतके नाम बन जाते हैं ॥ ८८ ॥ ८९ ॥

नागाद्यरिः कंठीरवो, मृगेन्द्रः केशरी हरिः ।
व्याघ्रश्चमूरः शार्दूलः, शरभोऽष्टापदोऽष्टपात् ॥९०॥

भापार्थ—हस्ती (हाथी) के नामोंके आगे अरि शब्द जोड़ देने से गजारि नागारि आदि तथा कण्ठीरव, मृगेन्द्र, केशरिन्. हरि (पु०) ये सब सिंह के नाम है व्याघ्र, चमूर (पु०) ये दो नाम तेंदुए के हैं शार्दूल, शरभ, अष्टापद और अष्टपात् (पु०) ये चार अष्टापद के नाम हैं ॥ ९० ॥

क्रोडो वराहो दंष्ट्री च, घृष्टिः पोत्री च शूकरः ।
उष्ट्रो मयः शृङ्खलिकः, करभः शीघ्रगामुकः ॥९१॥

भाषार्थ—क्रोड, वराह, दंष्ट्रिन्, घृष्टि, पोत्रिन्, और शूकर (पु०) ये सब सुअर के नाम है उष्ट्र, मय, शृंखलिक, करभ और शीघ्रगामुक (पु०) ये सब ऊँटके नाम है ॥ ६१ ॥

कौलेयकः सारमेयो, मण्डलः श्वा पुरोगतिः ।
जिह्वापो ग्रामशार्दूलः, कुक्कुरो रात्रिजागरः ॥६२॥

भाषार्थ—कौलेयक, सारमेय, मण्डल, श्वन्, पुरोगति, जिह्वाप, ग्रामशार्दूल, कुक्कुर और रात्रिजागर (पु०) ये सब कुत्ते के नाम है ॥ ६२ ॥

हेम चाष्टापदं स्वर्णं, कनकार्जुनकाञ्चनम् ।
सुवर्णं हिरण्यं भर्म, जातरूपं च हाटकम् ॥६३॥
तपनीयं कलधौतं, कार्त्तस्वरं शिलोद्भवम् ।
रूप्यं रजतं गुलिका, शुक्तिजं मौक्तिकं तथा ॥६४॥

भाषार्थ—हेमन्, अष्टापद, स्वर्ण, कनक, अर्जुन, काञ्चन, सुवर्ण, हिरण्य, भर्मन्, जातरूप, हाटक, तपनीय, कलधौत कार्त्तस्वर और शिलोद्भव (न०) ये सब सुवर्ण (सोने) के नाम हैं रूप्य, रजत (न०) गुलिका (स्त्री) ये तीन चांदीके नाम हैं शुक्तिज और मौक्तिक (न०) ये दो मोती के नाम हैं ॥ ६३ ॥ ६४ ॥

वित्तं वस्तु वसु द्रव्यं, स्वार्थं रा द्राविणं धनम् ।
कस्वरं तत्पतिं प्राहुः, कुबेरं चैकपिङ्गलम् ॥६५॥

वैश्रवणं राजराज-मुत्तराशापतिं तथा ।
अलकानिलयं श्रीदं, धनपर्यायदायदम् ॥ ९६ ॥

भावार्थ—वित्त, वस्तु, वसु, द्रव्य (न०) स्व, (पु०न०) अर्थ, रै (पु०) द्रविण, धन, कस्वर (न०) ये सब धनके नाम है इनके आगे 'पति, शब्द जोड़ देनेसे धनपति वगैरा और कुबेर, एकपिगल, वैश्रवण, राजराज, उत्तराशापति, अलकानिलय श्रीद तथा धनके नामोंके आगे 'दाय और द, शब्द जोड़ देनेसे धनदाय, धनद आदि भी कुबेरके नाम बन जाते हैं और वे सब पुल्लिंग होते हैं ॥ ९५ ॥ ९६ ॥

राष्ट्रं जनपदो निग्रो, जनान्तो विषयः स्मृतः ।
पूः पुरं पुरी नगरी, पत्तनं पुटभेदनम् ॥ ९७ ॥

भावार्थ—राष्ट्र (न०) जनपद, निग्र, जनान्त, विषय (पु०) ये देशके नाम है पुर् (स्त्री) पुर (न०) पुरी, नगरी (स्त्री) पत्तन, पुटभेदन (न०) ये सब नगरीके नाम हैं ॥ ९७ ॥

वक्त्रं लपनमास्यं च, वदन्ति वदनं मुखम् ।
आननं श्रवणं श्रोत्रं, श्रवः कर्णं श्रुतिं विदुः ॥ ९८ ॥

भावार्थ—वक्त्र, लपन, आस्य, वदन, मुख, आनन, (न०) ये मुखके नाम है श्रवण, श्रोत (न०) श्रव (पु०) कर्ण (न०) श्रुति (स्त्री) ये सब कानके नाम है ॥ ९८ ॥

दृगक्षि चक्षुर्नयनं, दृष्टिर्नेत्रं विलोचनम् ।
कटाक्षं केकरापाङ्गं, विभ्रमस्तस्य वैकृतम् ॥ ९९ ॥

भाषार्थ—दृश्, (स्त्री) अक्षि, चक्षुष्, नयन (न०) दृष्टि (स्त्री) नेत्र, त्रिलोचन (न०) ये सब नेत्रके नाम हैं कटाक्ष (पु० न०) केकर, अपाङ्ग, विभ्रम (पु०) ये नेत्रके विकार (निजारे) के नाम है ॥ ९९ ॥

दो-र्दोषा च भुजो बाहु, पाणिर्हस्तः करस्तथा ।
प्राहुर्बाहुशिरोंसं च, हस्तशाखा कराङ्गुलिः ॥१००॥

भाषार्थ—दोस्, (पु०) दोषा (स्त्री) भुज, बाहु, (स्त्री. पु) ये चार बांहके नाम है पाणि, हस्त, और कर (पु०) ये तीन हाथके नाम है बाहुशिरस् और अंस, (न०) ये दो कन्धेके नाम हैं और हस्तशाखा अर्थात् हस्तके नामोंके आगे शाखा 'शब्द' जोड देनेसे हस्तशाखा आदि और करांगुलि (स्त्री०) ये हाथकी अंगुलीके नाम है ॥ १०० ॥

दन्तवासोऽधरोऽप्योष्ठो, वर्णितो दशनच्छदः ।
शिरोधरो गलो ग्रीवा, कण्ठश्च धमनीधमः॥१०१॥

भाषार्थ—दन्तवास, अधर, ओष्ठ, और दशनच्छद (पु०) ये चार ओठके नाम है शिरोधर, गल (पु०) ग्रीवा (स्त्री) कण्ठ, धमनीधम, (पु०) ये पाच गलेके नाम है ॥ १०१ ॥

नासा घ्राणमुरो वक्षः, कुक्षिः स्याज्जठरोदरम् ।
स्तनः पयोधरो कुचो, वक्षोज इति वर्णितः ॥१०२॥

भाषार्थ—नासा (स्त्री) घ्राण (न०) ये दो नासिका (नाक) के नाम है उरस् और वक्षस् (न०) वे दो छातीके

नाम है कुक्षि (स्त्री) यह एक कूख का नाम है जठर और उदर (न०) ये दो पेटके नाम है स्तन, पयोधर, कुच, और वक्षोज (पु०) ये चार स्तनके नाम हैं ॥ १०२ ॥

कटिर्नितम्बः श्रोणिश्च, जघनं जानु जन्हु च ।
चलनं चरणं पादं, क्रमोऽङ्घ्रिश्च पदे विदुः ॥१०३॥

भावार्थ—कटि (स्त्री) कमर को कहते हैं स्त्रीकी कमर के पिछले भाग को नितम्ब (पु०) कहते है और अगले भाग को श्रोणि (स्त्री) और जघन (न०) कहते है जानु और जन्हु (न०) ये दो घुटनेके नाम है चलन (न०) चरण, पाद, (पुं०न०) क्रम, अङ्घ्रि (पु०) ये पांच चरणके नाम है ॥१०३॥

शिरो मूर्द्धोत्तमाङ्गं कं, प्रारभ्यं प्रेरितेरितम् ।
वाग्वचो वचनं वाणी, भारती गीः सरस्वती॥१०४॥

भावार्थ—शिरस् (न०) मूर्द्धन् (पुं०) उत्तमांग, क (न०) ये चार शिरके नाम है प्रारभ्य, प्रेरित और ईरित (न०) ये तीन प्रेरित हुई वस्तुके नाम है वाच् (स्त्री) वचस्, वचन (न०) वाणी, भारती, गिर् और सरस्वती ये सात वाणीके नाम है ॥१०४॥

सिंहद्विपघने गर्जो, हेषाऽश्वे बृंहितं गजे ।
स्फोर्जितं धेनुकलभे, स्तनितं जलदे तथा ॥१०५॥

भावार्थ—सिंह, हाथी, और मेघ की बोली को गर्ज (पु०) कहते हैं घोड़े के हींसने को हेषा (स्त्री) तथा हाथीकी बोली को बृंहित (न०) भी कहते हैं, गाय और हाथी के बच्चे की बोली

को स्फीत्कृत' (न०) और मेघकी गर्जनाको स्तनित भी कहते हैं ॥ १०५ ॥

स्यन्दने चीत्कृतं मन्त्रे, भटे घृष्टौ च हूङ्कृतम् ।
शीत्कृतं मणितं कामे, खूत्कृतं च शृंखलायुधे॥१०६॥

भाषार्थ—रथके शब्दको चीत्कृत (न०) तथा मन्त्र, योधा और शूकर की आवाज को हूङ्कृत कहते है मैथुनके शब्द को शीत्कृत और मणित (न०) कहते हैं । शृखला और आयुध (हथियार) इनके शब्द को खूत्कृत (न०) कहते है ॥ १०६ ॥

मञ्जीरकं तुलाकोटि, नूपुरं तत्र झङ्कृतम् ।
झाङ्कृतं मरुति क्रौञ्च-हंसयोः केङ्कृतं मतम् ॥१०७॥

भाषार्थ—मंजरीक, तुलाकोटि, नूपुर (न०) ये तीन बिछुओं के नाम है इनके शब्द को झङ्कृत (न०) कहते है वायुके शब्द को झाङ्कृत (न०) और क्रौंच तथा हंसके शब्दको केंकृत (न०) कहते है ॥ १०७ ॥

प्रतीतं संस्तुतं लब्धं, दृष्टं परिचितं स्मृतं ।
स्थितं दशमीस्थं च, परासुं च मृतं विदुः ॥१०८॥

भाषार्थ—प्रतीत, संस्तुत, लब्ध, दृष्ट, परिचित, और स्मृत (न०) ये छह; जानी हुई वस्तुके नाम हैं संस्थित, दशमीस्थ और परासु तथा मृत (तीन) ये चार मरे हुए पुरुष आदि के नाम हैं ॥ १०८ ॥

खेदो द्वेषोऽप्यमर्षश्च, रुट् कोपक्रोधमन्यवः ।
हर्षः प्रमोदः प्रमदो, मुत्तोषानन्दमुत्सवः ॥१०९॥

भाषार्थ—खेद, द्वेष, अमर्ष, रुष्, कोप, क्रोध, मन्यु (पु०) ये सात. क्रोधके नाम है, हर्ष, प्रमोद प्रमद, (पु०) मुद्, (स्त्री) तोष, आनन्द, उत्सव (पु०) ये सात, हर्षके नाम है ॥ १०९ ॥

कृपानुकम्पानुक्रोशो, हन्तोक्तिः करुणा दया ।
शेमुषी धिषणा प्रज्ञा, मनीषा धीस्तथाशयः ॥११०॥

भाषार्थ—कृपा, अनुकम्पा (स्त्री) अनुक्रोश (पु०) हन्तोक्ति, करुणा, दया. (स्त्री) ये छह, दया के नाम हैं, शेमुषी, धिषणा, प्रज्ञा, मनीषा, धी (स्त्री) आशय (पु०) ये छह बुद्धिके नाम हैं ॥ ११० ॥

प्राज्ञो मेधादिमान्विद्वानभिरूपो विचक्षणः ।
पण्डितः सूरिराचार्यो, वाग्मी नैयायिकः स्मृतः॥१११॥

भाषार्थ—प्राज्ञ और बुद्धिके नामोंके आगे मनुप् प्रत्यय जोड़ देने से शेमुषमित्, धिषणावत्, प्रज्ञावत् मनीषावत्, धीमत्, आशयवत्, मेधावत्, विद्वत्, अभिरूप विचक्षण, पण्डित, सूरि, आचार्य वाग्मिन्, और नैयायिक (पु०) ये सोलह पण्डितके नाम हैं ॥ १११ ॥

पारिषद्यो बुधः सभ्यः, सदस्यःसत्सभोचितः ।
आस्थानाधिपती राजा, राजसूयो नृपक्रतुः ॥११२॥

भाषार्थ—पारिषद्य, बुध, सभ्य, सदस्य, सदुचित, सभोचित (पु०) ये छह, सभासदके नाम है आस्थानाधिपति, और राजन् (पु०) ये राजाके नाम है इनके आगे 'सूय' शब्द जोड देने से राजसूय आदि (पु०) नृपक्रतु (राजयज्ञ) के नाम बन जाते है ॥ ११२ ॥

विष्टरं मल्लिका पीठ-मासन्दीमासनं विदुः ।
विष्टपं भुवनं लोको, जगत्तस्य पतिर्जिनः ॥११३॥
सर्वज्ञो वीतरागोऽर्हन्, केवली धर्मचक्रभृत् ।
तीर्थंकरस्तीर्थकरस्तीर्थकृद्दिव्यवाक्पतिः ॥ ११४ ॥

भाषार्थ—विष्टर (पु०) मल्लिका (स्त्री) पीठ (न०) आसन्दी (स्त्री) आसन (न०) ये पाच, आसनके नाम हैं विष्टप, भुवन (न०) लोक (पु०) जगत् (न०) ये चार, संसारके नाम है इनके आगे 'पति' शब्द जोड देनेसे विष्टप पति आदि तथा जिन सर्वज्ञ, वीतराग अर्हत, केवलिन्, धर्मचक्र-भृत्, तीर्थंकर, तीर्थकर, तीर्थकृत, दिव्यवाक्पति (पु०) ये सब जिनन्द्र भगवान् के नाम है ॥ ११३ ॥ ११४ ॥

वर्षीयान्वृषभो ज्यायान्, पुरुषाद्यः प्रजापतिः ।
ऐक्ष्वाकुः काश्यपो ब्रम्हा, गौतमो नाभिजोऽग्रजः ११५

भाषार्थ—वर्षीयस् वृषभ, ज्यायस्, पुरुषाद्य, प्रजापति, ऐक्ष्वाकु काश्यप, ब्रह्मन्, गौतम, नाभिज, अग्रज (पु०) ये सब आदिनाथ के नाम है ॥ ११५ ॥

सन्मतिर्महतिर्वीरो, महावीरोऽन्त्यकाश्यपः ।
नाथान्वयो वर्द्धमानो, यत्तीर्थमिह सांप्रतम् ॥११६॥

भाषार्थ—सन्मति, महति, वीर, महावीर, अन्त्यकाश्यप, नाथान्वय, वर्द्धमान (पु०) ये बर्द्धमान (अन्तिम तीर्थकर) के नाम है इस वक्त भरत क्षेत्र में उन्हीं का बताया हुआ धर्म चल रहा है ॥ ११६ ॥

चेलं निवसनं वासश्चीरमम्बरमंशुकम् ।
वस्त्राद्यन्तदिगाद्यादि-संज्ञितो वृषभेश्वरः ॥११७॥

भाषार्थ—चेल, निवसन, वासस्, चीर, अम्बर, और अंशुक (न०) ये छह, वस्त्र के नाम है दिशा के नाम के आगे चेल आदि वस्त्रोंके नामोंके जोड़ देनेसे दिगम्बर आदि, वृषभेश्वर अर्थात् धर्मके ईश्वर (दिगम्बर मुनि) के नाम बन जाते है ॥११७॥

कुंकुमं रुधिरं रक्तं, कस्तूरी मृगनाभिजा ।
कर्पूरं घनसारं च, हिमं सेवेत पुण्यवान् ॥११८॥

भाषार्थ—कुंकुम, रुधिर और रक्त (न०) ये तीन, केसरके नाम है कस्तूरी मृगनाभिजा (स्त्री) ये दो, कस्तूरीके नाम हैं कपूर (दो) घनसार हिम (पु०) ये तीन कर्पूरके नाम हैं इन चीजों को पुण्यात्मा भोगते है ॥ १२८ ॥

समालम्भोऽङ्गरागश्च, प्रसाधनविलेपनम् ।
भूषणाभरणं रूच्यं, माल्यं माला,गुणि स्रजम् ॥११९॥

भाषार्थ—समालम्भ,अंगराज, (पु०) प्रसाधन, विलेपन (न०) ये चार लेपन के नाम है

भूषण, आभरण, रूच्य (न०) ये तीन गहनेके नाम है। माल्य (न०) माला, गुणि, सृज् (स्त्री) ये मालाके नाम है ॥११९॥

मेखला रसना काञ्ची, हेमपर्यायसूत्रकम् ।
श्रोणीविम्बे कटीसूत्रं, मानसूत्रमिवाहितम् ॥१२०॥

भाषार्थ—मेखला, रसना, काञ्ची (स्त्री) तथा सुवर्ण के नामों के आगे 'सूत्र, शब्दको जोड़ देनेसे सुवर्णसूत्र, हेमसूत्र आदि (न०) भी कटीसूत्र अर्थात् करधौनीके नाम हो जाते है वह करधौनी कटीभाग में ऐसी शोभती है मानो उसके नापने का सूत्र ही है ॥ १२० ॥

मदिरां मद्यमैरेयं, सीधुं कादम्बरीमिराम् ।
प्रसन्नां वारुणीं हालां, मधुवारां सुरां विदुः ॥१२१

भाषार्थ—मदिरा (स्त्री) मद्य, मैरेय (न०) सीधु, कादम्बरी, इरा, प्रसन्ना, वारुणी, हाला, मधुवारा, सुरा, (स्त्री) ये सब मदिरा (शराब) के नाम है ॥ १२१ ॥

शुण्डासवस्तद्विधायी, शौण्डो गद्येत मद्यपः ।
शक्तोऽक्षद्यूतपानेषु, विचित्रा शब्दपद्धतिः ॥१२२॥

भाषार्थ—शुण्डा (स्त्री) यह एक प्रकारकी मदिराका नाम है इसके पीनेवाले और बनानेवाले को शौण्ड कहते है तथा जो पांसोंसे खेलने में, जुवामें, मद्य पीने में आसक्त हो उसे मद्यप कहते है यद्यपि मद्य पीनेवाले को ही मद्यप कहना चाहिए जुवारी को नहीं; परन्तु शब्दोंके प्रयोगकी परिपाटी विचित्र ही है इस लिए उसको भी मद्यप कहते है ॥ १२२ ॥

सर्पिर्हैयङ्गवीनाज्यं, दुग्धं क्षीरामृतं पयः ।
उदश्विन्मथितं तक्रं, कालशेयं पिबेद् गुरुः ॥१२३॥

भापार्थ—सर्पिष्, हैयङ्गवीन, आज्य (न०) ये तीन घी के नाम है दुग्ध, क्षीर, अमृत, पयस् (न०) ये दूध के नाम हैं तथा उदश्वित्, मथित, तक्र, कालशेय (न०) ये चार छाछ (मठे) के नाम है इसको बलिष्ट पुरुष पीवें ॥ १२३ ॥

प्रायोवयोदशाऽनेहः-पूर्णं यौवनिकं विदुः ।
तारुण्यं यौवनं चान्त्यो, वार्द्धीनः स्थविरोमतः॥१२४

भाषार्थ—प्रायस्, वयस् (न०) दशा (स्त्री) अनेहस् (पु०) ये चार अवस्था (हालत) के नाम है इनके आगे पूर्ण, शब्द जोड़ देने से प्राय·पूर्ण, वयःपूर्ण, दशापूर्ण, अनेहःपूर्ण (पु०) ये यौवनिक अर्थात् जवान पुरुष के नाम बन जाते है । तारुण्य, यौवन (न०) ये दो जवानी के नाम हैं तथा अन्त्य, वार्द्धीन और स्थविर (पु०) ये बुड्ढे के नाम हैं ॥ १२४ ॥

वंशोऽन्वयोऽन्ववायः स्या-दाम्नायः सन्ततिः कुलं ।
ओघो वर्गश्च सन्तानः, काव्यमेव कवेः स्थितिः १२५

भषार्थ—वंश, अन्वय, अन्ववाय, आम्नाय, (पु०) सन्तति (स्त्री) कुल (न०) ओघ, वर्ग, सन्तान, (पु०) ये सब कुल के नाम हैं कवि लोगों का काव्य ही कुल है । भावार्थ—जिस तरह कुल से लोगों का नाम निशान रहता है उसी तरह कवि का नाम निशान उसकी कृति अर्थात् काव्य से रहता है इस लिए उसका वही कुल है ॥ १२५ ॥

हंसो मरालश्चक्राङ्गो, हंसवाहः सनातनः ।
मयूरो बर्हिणः केकी, शिखी प्रावृषिकस्तथा॥१२६।
नीलकण्ठः कपाली च, शिखण्डी तत्पति गुहः ।
वरटा वारली हंसी, कोक ईहामृगो वृकः ॥१२७॥

भाषार्थ—हंस, मराल, चक्रांग (पु०) ये तीन हंसके नाम हैं हंस के नामों के आगे 'वाह' शब्द जोड देने से सनातन अर्थात् ब्रह्माके नाम बन जाते हैं जैसे हंसवाह आदि। मयूर बर्हिण, केकिन्, शिखिन्, प्रावृषिक और नीलकण्ठ, कपालिन्, शिखण्डिन्, (पु.) ये सब मयूर के नाम हैं इनके आगे 'पति' शब्द जोड़ देने से कार्तिकेयके नाम बन जाते है जैसे मयूरपति आदि। वरटा, वारली, हंसी, (स्त्री) ये तीन हसनी के नाम हैं कोक, इहामृग, वृक (पु) ये तीन कोक पक्षीके नाम हैं॥ १२६॥ १२७॥

हरिणो मृगः पृषत-स्तदङ्कः शर्वरीकरः ।
पन्नगोऽहि विषधरो, लेलिहानो भुजङ्गमः ॥१२८॥
नागोरगौ फणीसर्प-स्तद्वैरी विनयात्मजः ।
सुपर्णो गरुडस्तार्क्ष्यो, गरुत्मान् शकुनीश्वरः॥१२९
इन्द्रजिन्मन्त्रपूतात्मा, वैनतेयो विषक्षयः ।
खमिन्द्रियं हृषीकं च, श्रोतोऽक्षं करणं विदुः॥१३०

भाषार्थ—हरिण, मृग, पृषत (पु.) ये हिरण के नाम हैं इन के आगे 'अंक, शब्द जोड़ देने से हरिणांक आदि और शर्वरी-

कर अर्थात् रात्रि के नामों के आगे कर शब्द जोड़ देने से शर्वरीकर आदि भी चन्द्रमा के नाम हो जाते है और वे सब पुल्लिंग होते हैं। पन्नग, अहि, विषधर, लेलिहान, भुजंगम, नाग उरग, फणिन्, सर्प, (पु) ये सब सर्प के नाम हैं इनके आगे 'वैरिन्, शब्द जोड़ देने से पन्नगवैरिन् आदि और सुपर्ण, गरुड, तार्क्ष्य गुरुत्मत्, शकुनीश्वर, इन्द्रजित्, मन्त्रपूतात्मन्, वैनतेय, विषक्षय ये सब विनतात्मज अर्थात् गरुड के नाम है और वे सब पुल्लिंग होते है। ख, इन्द्रिय, हृषीक, श्रोतस्, अक्ष, करण (न०) ये सब इन्द्रिय के नाम है ॥ १२८ ॥ १२६ ॥ १३० ॥

पुण्यं भाग्यं च सुकृतं, भागधेयं च सत्कृतम् ।
अघमंहश्च दुरितं, पाप्मा पापं च किल्बिषम्॥१३१॥
वृजिनं कलिलमेनो, दुःकृतं तज्जयी जिनः ।
सदनं सद्म भवनं, धिष्ण्यं वेश्माथ मन्दिरं ॥१३२॥
गेहं निकेतनागारं, निशान्तं निर्वृतं गृहं ।
वसत्यवसथावासं, स्थानं धामास्पदं पदम् ॥१३३॥
निकायं निलयं वस्त्यं, शरणं चिकुरालयम् ।
खेयं खातं च परिखा, वप्रं स्याद् धूलिकुट्टिमम्॥१३४

भाषार्थ—पुण्य, भाग्य, सुकृत, भागधेय, सत्कृत (न०) ये सब पुण्य के नाम हैं अघ, अंहस्, दुरित (न०) पाप्मन् (पु.) पाप, किल्विष, वृजिन, कलिल, एनस्, दुःकृत (न०) ये सब पाप के नाम हैं इनको जीतने वाले को जिन कहते हैं भावार्थ—इन पाप

के नामों के आगे 'जायिन्' शब्द जोड़ देने से जिन (जिनेन्द्र) के नाम हो जाते है ये सब पुल्लिंग होते हैं ।

सदन, सद्मन्, भवन, धिष्ण्य, वेश्मन्, मन्दिर, गेह, निकेतन, आगार, निशान्त, निवृत, गृह (न०), वसति, अवसथ, आवास (पुं०), स्थान, धामन्, आस्पद, पद (न०), निकाय, निलय (पु०), वस्त्य, शरण (न०) ये सब आलय (घर) के नाम हैं । खेत, खात (न०), परिखा (स्त्री०) ये तीन खाई के नाम है । वप्र और धूलिकुट्टिम (न०) ये दो, खाई पर जो मिट्टी का कूट होता है उसके नाम हैं ॥१३१॥१३२॥१३३॥१३४॥

प्राकारः परिधिः सालः, प्रतोली गोपुराकृतिः ।
प्रासादसौधहर्म्याणि, निर्व्यूहो मत्तवारणम्॥१३५

भाषार्थ—प्राकार (पुं०), परिधि (स्त्री), साल (पु०) ये तीन कोट के नाम हैं । गोपुर अर्थात् नगर के दरवाजे के आकार को जिसमें से लोग आते जाते है, प्रतोली कहते है । प्रासाद (पु०), सौध (पुं० न०), हर्म्य (न०) ये तीन महलके नाम हैं । भावार्थ—धनाढ्यों के महल को हर्म्य, देवताओं के स्थान को प्रासाद और राजा के भवन को सौध कहते है । निर्व्यूह (पु०) यह खूंटी का नाम है, मत्तवारण (न०) छज्जे के नीचे के टन्डों को कहते हैं ॥ १३५ ॥

वातायन ग्नालम्ब—मालम्ब्यं मुखमासनम् ।
समः सवर्णः सजातिः, सदृक्षः सदृशः सदृक्॥१३६
तुल्यः सधर्मः सरूप—स्तुला कल्पोपमाभिधा ।

विन्मन्यो विद्यमानश्च, गुरुस्थानोऽम्बुजाननः॥१३७
सिंहनादीति पर्याय-मुपमानेषु योजयेत्।
व्यपदेशं निभं व्याजं, पदं व्यतिकरं छलं ॥१३८॥

भाषार्थ—वातायन, अनालम्ब, आलम्ब्य, मुखासन (न०) ये झरोखे के नाम हैं। सम, सवर्ण, सजाति, सदृत्त, सदृश, सदृक्, तुल्य, सधर्म, सरूप (पुं०) ये सब समान (बराबर) के नाम हैं। तुला कक्षा, उपमा (स्त्री) ये तीन उपमा के नाम हैं। विन्मन्य, विद्यमान, गुरुस्थान, अम्बुजानन, सिंहनादिन् (पुं०) इत्यादि पर्याय शब्दों को उपमानमें लगाना चाहिए। भावार्थ—ये शब्द उपमान के द्योतक हैं। व्यपदेश, निभ, व्याज पद, व्यतिकर, छल (न०) ये सब छल के नाम है ॥१३६॥१३७॥१३८॥

छद्म वृत्तान्तमुत्प्रेक्षा, शब्दमन्यं च निर्णयेत्।
व्रातः पूगः समाजश्च, समूहः सन्तति र्व्रजः॥१३९
व्यूहो निकायो निकरो, निकुरम्बं कदम्बकं।
ओघः समुदयः संघः, संघातः समितिस्ततिः॥१४०
निचयः प्रकरः पंक्तिः, पशूनां समजो व्रजः।

भाषार्थ—छद्मन्, वृत्तान्त, (न०) ये उत्प्रेक्षा के नाम हैं, इसी तरह के और भी शब्द जान लेना चाहिए। व्रात, पूग, समाज, समूह, सन्तति, व्रज, व्यूह, निकाय, निकर, (पुं०), निकुरम्ब, कदम्बक, (न० पुं०) ओघ, समुदय, संघ, संघात (पुं०) समिति, तति (स्त्री) निचय, प्रकर (पुं०,) पंक्ति (स्त्री) ये

सब समूह के नाम हैं। पशुओं के समुदाय को व्रज (पुं०) कहते है ॥१३६॥१४०॥

समीपाभ्यासमासन्न-मभ्यर्णं सन्निधिं विदुः ॥१४१
अविदूरं च निकट-मविलम्बमनन्तरम् ।

भाषार्थ—समीप, अभ्यास, आसन्न, अभ्यर्ण (न०) सन्निधि (स्त्री) अविदूर, निकट, अविलम्ब, अनन्तर (न०) ये सब सान्निधि अर्थात् निकट (पास) के नाम हैं ॥१४१॥

जित्या हलि हलः सीरं, लाङ्गलं तत्करोबलः ॥१४२
रेवतीदयितो नील-वसनः केशवाग्रजः ।

भाषार्थ—जित्या, हलि (स्त्री) हल (पुं०) सीर, लांगल (न०) ये सब हल के नाम हैं, इनके आगे कार शब्द जोड देने से जित्याकर आदि और बल, रेवतीदयित, नीलवसन, केशवाग्रज (पुं०) ये सब किसान (खितहड़) के नाम है ॥१४२॥

अर्जुनः फल्गुनो जिष्णुः, श्वेतवाजी कपिध्वजः १४३
गाण्डीवी कार्मुकी सव्य-साची मध्यमपाण्डवः ।
वृषसेनः सुनिर्मोको, दैत्यारिः शक्रनन्दन ॥ १४४॥
कर्णशूली किरीटी च, शब्दभेदी धनञ्जयः ।

भाषार्थ—अर्जुन, फल्गुन, जिष्णु, श्वेतवाजिन्, कपिध्वज, गाण्डीविन्, कार्मुकिन्, सव्यसाचिन्, मध्यमपाण्डव, वृषसेन, सुनिर्मोक, दैत्यारि, शक्रनन्दन, कर्णशूलिन्, किरीटिन्, शब्दभेदिन्, धनञ्जय (पुं०) ये सब अर्जुन के नाम है ॥१४३॥१४४॥

समवर्ती यमः कालः, कृतान्तो मृत्युरन्तकः ॥१४५॥
धर्मराजः पितृपतिः, सूरसूनु परेतराट् ।
यमुनो यमुनाभ्राता, श्राद्धदेवश्च दण्डभृत् ॥१४६॥

भाषार्थ—समवर्तिन्, यम, काल, कृतान्त, मृत्यु, अन्तक, धर्मराज, पितृपति, सूरसूनु, परेतराज्, यमुन, यमुनाभ्रातृ, श्राद्धदेव, और दण्डभृत् (पु०) ये सब काल के नाम है ॥१४५॥१४६॥

कुरुकीचकयोः शत्रु-र्वायुपुत्रो वृकोदरः ।
धर्मात्मजोऽजातरिपुः, कौन्तेयो भरतान्वयः ॥१४७॥
कौरव्यो राजलक्ष्मा च, सोमवंश्यो युधिष्ठिरः ।

भाषार्थ—कुरुशत्रु, कीचकशत्रु, वायुपुत्र और वृकोदर (पु०) ये चार भीमके नाम है । धर्मात्मज, अजातरिपु, कौन्तेय, भरतान्वय, कौरव्य, राजलक्ष्मन्, सोमवंश्य और युधिष्ठिर (पु०) ये सब युधिष्ठिर के नाम है ॥ १४७ ॥

कृष्णं नीलासितं कालं, धूमं धूम्रमलिप्रभं ॥१४८॥

भाषार्थ—कृष्ण, नील, असित, काल, धूम, धूम्र, और अलिप्रभ, ये सात काले रंग के नाम है ये तीनों लिङ्गों में देखे जाते हैं ॥ १४८ ॥

तमोन्धकारतिमिरं, ध्वान्तं संतमसं तमम् ।
श्वेतार्जुनौ शुचिः श्येतो, वलक्षं सितपाण्डुरम् ॥१४९॥
शुक्लावदातं धवलं, पाण्डु शुभ्रं शशिप्रभम् ।
लोहितं रक्तमाताम्रं, पाटलं चिशदारुणम् ॥१५०॥

भाषार्थ—तमस् (न०) अन्धकार (पु० न०) तिमिर ध्वान्त, संतमस, तम (न०) ये सब अन्धेरे के नाम हैं। श्वेत, अर्जुन (पु०) शुचि (स्त्री) श्येत (पु०) वलक्ष, सित, पाण्डुर, शुक्ल, अवदात, धवल, (पु० न०) पाण्डु, (पु०) शुभ्र, शशिप्रभ (न०) ये सब सफेद के नाम हैं और प्रायः ये सब तीनों लिंगों में देखे जाते हैं तथा लोहित, रक्त, आताम्र (तीन) ये तीन लाल के नाम है कुछ कम लाल वर्ण को पाटल (तीन) कहते है ॥ १४६ ॥ १५० ॥

गौरं पीतं हरिद्राभं, पालाशं हरितं हरित् ।
हरिणी लोहिनी शोणी, गौरी श्येनी पिशङ्ग्यपि।१५१
शारंगी शबली काली, कल्माषी नीलपिङ्गली ।
परागं मधु किञ्जल्कं, मकरन्दंच कौसुमम् ॥१५२॥

भाषार्थ—गौर, पीत, हरिद्राभ (तीन) ये तीन पीले के नाम हैं। पालाश, हरित् (तीन) ये तीन हरे के नाम हैं। हरिणी, लोहिनी, शोणी, गौरी, श्येनी, पिशङ्गी, सारङ्गी, शबली, काली, कल्मापी, नीलपिङ्गली, (स्त्री) ये सब स्त्रीलिंग शब्द रंग के वाचक है परन्तु ध्यान रहें कि इनका प्रयोग, स्त्रीलिंग में ही होगा। पराग, मधु, किञ्जल्क मकरन्द, कौसुम (न०) ये पराग के नाम है ॥ १५१ ॥ १५२ ॥

उच्चाराद्रजः पांसुं, रेणुं धूलीं च योजयेत् ।
कलङ्कावद्यमलिनं, किञ्जल्कं लक्ष्म लाञ्छनम्।१५३।
निर्वाधमधमं पङ्कं, मलीमसमपि त्यजेत् ।

भाषार्थ—तथा उपचार से पुष्प के नामों के आगे रजस् (न०) पासु, रेणु, (पु०) धूली (स्त्री) इन धूली के नामों को जोड़ देनेसे पुष्परजस् आदि भी पराग के नाम बन जाते हैं कलङ्क (पु०) अवद्य, मलिन, (न०) किञ्जल्क (पुं०) लक्ष्मन्, लाञ्छन, निर्वाध, अधम (न०) पङ्क, मलीमस (पु० न०) ये सब कलंक के नाम है वह कलंक सर्वथा त्याज्य है ॥ १५३ ॥

जनोदाहरणं कीर्ति, साधुवादं यशो विदुः ॥१५४॥
वर्णं गुणावलिं ख्याति-मवदानं तु साहसम् ।

भाषार्थ—जनोदाहरण (न०) कीर्ति (स्त्री) साधुवाद (पु०) यशस्, वर्ण (न०) गुणावलि, ख्याति (स्त्री) अवदान, साहस (न०) ये सब कीर्ति के नाम हैं ॥ १५४ ॥

प्रेष्यादेशप्रदेशाज्ञा नियोगाः शासनं तथा ॥१५५॥
संदेशः प्रिययो वार्ता, प्रवृत्तिः किंवदन्त्यपि ।
कठोरं कठिनं स्तब्धं, कर्कशं परुषं दृढम् ॥ १५६ ॥

भाषार्थ—प्रेष्य, आदेश, निदेश, आज्ञा, नियोग (पु०) शासन (न०) ये आज्ञा के नाम है। प्यारों के समाचार को संदेश (पु०) कहते है प्रवृत्ति और किंवदन्ती (स्त्री) ये दो लोगों की अफवाह के नाम है। कठोर कठिन, स्तब्ध, कर्कश, परुष, दृढ़ (तीन) ये सब कठोर (कड़े) के नाम हैं ॥ १५५ ॥ ॥ १५६ ॥

अश्लीलं काहलं फल्गु, कोमलं मृदु पेशलं ।
प्रत्यग्रं साम्प्रतं नव्यं, नवं नूतनमग्रिमम् ॥१५७॥

भाषार्थ—अश्लील, काहल, फल्गु, (न०) ये तीन व्यर्थ के नाम है। कोमल, मृदु, पेशल (न०) ये कोमल के नाम हैं। प्रत्यग्र, साम्प्रत, नव्य, नव, नूतन, अग्रिम (न०) ये सब नवीन के नाम हैं ॥ १५७ ॥

पुराणं जरठं जीर्णं, प्राक्तनं सुचिरन्तनम् ।
भो रे हंहो हे चामन्त्रे, कश्चित्किञ्चिन संशये॥१५८

भाषार्थ—पुराण जरठ, जीर्ण, प्राक्तन, सुचिरन्तन (न०) ये सब पुराने (जीर्ण) के नाम है। भो, रे, हंहो, हे (अ०) ये सब शब्द आमन्त्रण अर्थात् किसी को बुलाने में आते है और कच्चित्, किंचिन (अ०) ये दो सशय अर्थ में आते हैं ॥१५८॥

द्राक् चणोऽह्नाय सपदि, निषेधे मा न खल्वयम् ।
उच्चैरुच्चावचं तुङ्ग-मुच्चमुन्नतमुच्छ्रितम् ॥ १५९॥

भाषार्थ—द्राक्, चणे, अह्नाय, सपदि, (अ०) ये चार तत्काल के नाम हैं। मा, न, खलु (अ०) ये निषेध करने में आते है, उच्चैस्, (अ०) उच्चावच, तुंग, उच्च, उन्नत, उच्छ्रित (न०) ये सब ऊंचे के नाम है ॥ १५९ ॥

नीचं न्यगातनं कुब्जं, नीचै र्ह्रस्वं नयेत् परं ।
अमा सह समं साकं, सार्द्धं सत्रा सजूः समाः॥१६०

भाषार्थ—नीचं, न्यगातन, कुब्ज (पु०) नीचैस् (अ० ह्रस्व (पु०) ये सब नीचे के नाम है । अमा, सम, साक, सार्द्ध सत्रा (अ०) सजुष् (न०) ये सब साथ के नाम हैं ॥ १६०

सर्वदा सततं नित्यं, शश्वदात्यन्तिकं सदा ।
शृङ्गी दृतिहरि नाथ-हरिस्तिर्यञ्चशृंगिणः ॥१६१॥

भाषार्थ—सर्वदा, सततं नित्यं, शश्वत्, आत्यन्तिक, सदा (अ०) ये सदा (हमेशा) के नाम है । शृङ्गिन्, दृतिहरि, नाथ-हरि (पु०) ये तीन सींग वाले पशु के नाम है ॥ १६१ ॥

गौश्चतुष्पात् पशुस्तत्र, महिषी नाम देहिका ।
वियोगं मदनावस्था-विरहं फुल्लकं विदुः ॥१६२॥

भाषार्थ—गो, चतुष्पात्, पशु (पु०) ये तीन पशुक नाम है उनमें भी भैस को माहिषी और देहिका (स्त्री) कहते हैं काम की अवस्था के विरह को वियोग और फुल्लक (पु०) कहते हैं ॥ १६२ ॥

प्रेमाभिलाषमालम्बं, रागं स्नेहमतः परं ।
सांहितं सहितं युक्तं, संपृक्तं संभृतं युतम् ॥१६३॥
संस्कृत समवेतं च, प्राहुरन्वीतमन्वितम् ।
वर्त्माध्वा सरणिः पन्थाः, मार्गः प्रचरसंचरौ ॥१६४॥

भाषार्थ—प्रेमन् (न०) अभिलाप, आलम्ब, राग, स्नेह (पु०) ये सब राग के नाम है इनके वाद, सहित, सहित, युक्त संपृक्त, संभृत, युत, संस्कृत, समवेत अन्वीत, अन्वित (तीन) ये सब सहित के नाम हैं । वर्त्मन् (न०) अध्वन् सरणि, पथिन्, मार्ग, प्रचर, संचर (पु०) ये मार्ग के नाम हैं ॥१६३॥१६४॥

त्रिमार्गनाम्नगा गङ्गा, घोषो गोमण्डलं व्रजः ।

कृती नदीष्णो निष्णातः, कुशली निपुणः पटुः॥१६५
क्षुण्णः प्रवीणः प्रगल्भः, कोविदश्च विशारदः।
विदग्धश्चतुरो धूर्त-श्चाटुकृत्कितवः शठः॥ १६६॥

भाषार्थ—इन मार्ग के नामों के पीछे 'त्रि, शब्द और आगे' गा, शब्द जोड़ देने से त्रिमार्गगा (स्त्री) आदि गंगा के नाम बन जाते है। घोष, (पु०) गोमण्डल (न०) व्रज (पु०) ये तीन गौ के घेरे के नाम है। कृतिन्, नदीष्ण, निष्णात, कुशलिन्, निपुण, पटु, क्षुण्ण, प्रवीण, प्रगल्भ, कोविद, विशारद, विदग्ध, चतुर (पुं०) ये चतुर के नाम है। धूर्त, चाटुकृत, कितव, शठ, (पु०) ये धूर्त के नाम है ॥१६५॥१६६॥

क्वापि नागरिको ज्ञेयो, गोत्रं संज्ञाङ्कनाम तत्।
मुग्धो मूढो जडो नेडो, मूको मूर्खश्च कद्वदः॥१६७।
स देवानांप्रियोऽप्राज्ञो, मन्दो धीनामवर्जितः।
षाष्टिकः कलमः शालि-र्व्रीहिः स्तम्बकरिस्तथा १६८

भाषार्थ—कहीं २ नागरिक को भी धूर्त कहते है। गोत्र (न०) संज्ञा (स्त्री) अंक, नाम (न०) ये नाम के नाम हैं। मुग्ध, मूढ़, जड़, नेड़, मूक, मूर्ख, कद्वद, देवानाप्रिय, अप्राज्ञ, मन्द और बुद्धि के नामों के आगे ' वर्जित, शब्द जोड़ देने से धीवर्जित आदि (पु०) ये सब मूर्ख के नाम हैं। षाष्टिक, कलम, शालि, व्राहि, स्तम्बकरि (पु०) ये शालि (धान) के नाम हैं ॥१६७॥ १६८॥

वत्सः शकृत्करि जातः, षोडः षड्दशनः स्मृतः ।
शौण्डीरो गर्वितः स्तब्धो, मानी चाहंकृदुद्धतः १६९
उद्ग्रीव उद्धरो दृप्तो, नीचश्च पिशुनोऽधमः ।
चौरैकागारिकस्तेना—स्तस्करः प्रतिरोधकः ॥१७०॥

भाषार्थ—वत्स, शकृत्करि, जात (पुं०) ये तीन बछड़े के नाम हैं। षोड, षड्दशन, (पुं०) ये दो छह दांत वाले बछड़े के नाम हैं। शौण्डीर, गर्वित, स्तब्ध, मानिन्, अहंकृत्, उद्धत, उद्ग्रीव, उद्धर, दृप्त (पुं०) ये सब अहंकारी के नाम हैं। नीच, पिशुन, अधम (पुं०) ये नीच के नाम हैं। चौर, एकागारिक, स्तेन, तस्कर, प्रतिरोधक तथा—

निशाचरो गूढचरो, हारकः पारिपान्थिकः ।
प्रस्तरोत्पलपाषाण—दृषद्धातुशिलाघनाः ॥१७१॥

भाषार्थ—निशाचर, गूढचर, हारक, पारिपान्थिक (पुं०) ये सब चोर के नाम हैं। प्रस्तर, उपल, पाषाण, दृषत्, धातु (पुं०) शिला (स्त्री) घन (पुं०) ये सब पत्थर के नाम हैं ॥१७१॥

तत्र जातमयो लोहं, शातकुम्भं नयेत् परं ।
साधीयोऽत्यर्थमत्यन्तं, नितान्तं सुष्ठु वै भृशं॥१७२

भाषार्थ—पत्थर के नामों के आगे 'जात' शब्द जोड़ देने से उपलजात आदि (पुं०) अयस् (न०) लोह (पुं०) ये सब लोह के नाम हैं। तथा उत्पल आदि के आगे 'जात, शब्द जोड़ देने से सुवर्ण के भी नाम बन जाते हैं जैसे उपलजात आदि।

साधीयस् (न०) अत्यर्थ, अत्यन्त, नितान्त, सुष्ठु, भृशम् (अ०) ये सब बहुत के नाम हैं ॥ १७२ ॥

स्फुटं साधु खलु स्पष्टं, विशदं पुष्कलामलं ।
चित्राश्चर्याद्भुतं चोद्यं, विस्मयः कौतुकोऽप्यहो १७३

भाषार्थ—स्फुट, साधु, खलु, (अ०) स्पष्ट, विशद, पुष्कल, अमल, (न०) ये सब स्पष्ट के नाम हैं। चित्र (न०) आश्चर्य (पुं०) अद्भुत चोद्य, (न०) विस्मय, कौतुक (पुं०) अहो (अ०) ये सब आश्चर्य के नाम है ॥ १७३ ॥

अभियोगोद्यमोद्योगा, उत्साहो विक्रमो मतः ।
क्षामं क्षान्तं कृशं क्षीणं, हीनं जीर्णं पुरातनम् ॥१७४
शीर्णावसानं न्यूनं च, धैर्यं शौर्यञ्च पौरुषं ।
रहोऽनुरहसोऽपांशु, रहस्यं च भिनत्ति कः ॥१७५

भाषार्थ—अभियोग, उद्यम, उद्योग, उत्साह, विक्रम (पुं०) ये सब उत्साह के नाम है। क्षाम, क्षान्त, कृश, क्षीण, हीन, जीर्ण, पुरातन, शीर्ण, अवसान, न्यून (न०) ये सब दुबले (दुर्बल) के नाम है। धैर्य, शौर्य, पौरुष, (न०) ये सब धीरज के नाम हैं। रहस् (अ०) अनुरहस (न०) उपांशु (अ०) रहस्य (तीन) ये छिपे हुए अर्थात् गुप्त कार्य के नाम है। सज्जन लोग किसी की गुप्त बात को प्रगट नही करते हैं ॥ १७४ ॥ १७५ ॥

कीनाशः कृपणो लुब्धो, गृध्नो दीनोऽभिलाषुकः ॥
क्षिप्राशुमंक्ष्वरं शीघ्रं, सहसा झटिति द्रुतम् ॥१७६

तूर्णं जवः स्यदो रंहो, रयो वेगस्तरो लघुः ।

भाषार्थ—कीनाश, कृपण, लुब्ध, गृध्र, दीन, अभिलाषुक (पु०) ये सब कृपण (कंजूस) पुरुष के नाम है। क्षिप्र, आशु मंक्षु, अरं, शीघ्र, सहसा, झटिति, द्रुत, तूर्ण (अ०) जव, स्यद (पु०) रहस्, (अ०) वेग, तर, लघु (पु०) ये सब शीघ्र (जल्दी) के नाम हैं ॥ १७६ ॥

प्राध्वंकृतः सितो बद्धः, सन्धानीतो नियन्त्रितः १७७
नियमितः श्रृंखलितः, पिनद्धः पाशितो रिपुः ।

भाषार्थ—प्राध्वंकृत, सित, बद्ध, सन्धानीत, नियन्त्रित नियमित, शृंखलित, पिनद्ध, पाशित (पु०) ये सब पाश से बांधे हुए शत्रु के नाम हैं ॥ १७७ ॥

कान्तं कमनं कमूं च, कमनीयं मनोहरं ॥ १७८ ॥
अभिरामं रमणीयं, रम्यं सौम्यं च सुन्दरम् ।
चारु श्लक्ष्णं च रुचिरं, प्रशस्तं हृद्यबन्धुरम् ॥ १७९ ॥
दर्शनीयं मनोज्ञं च, चित्तपर्यायहारि च ।

भाषार्थ—कान्त, कमन, कमू, कमनीय, मनोहर, अभिराम रमणीय, रम्य, सौम्य, सुन्दर, चारु, श्लक्ष्ण, रुचिर, प्रशस्त, हृद्य, बन्धुर, दर्शनीय, मनोज्ञ और चित्त के पर्याय वाची शब्दों के आगे 'हारि' शब्द जोड़ देने से चित्तहारि आदि (न०) ये सब सुन्दर के नाम हैं ॥ १७८ ॥ १७९ ॥

अवश्यायं तुषारं च, प्रालेयं तुहिनं हिमम् ॥१८०॥
नीहारं तत्करं विद्धि, मृगाङ्कं रोहिणीपतिम् ।
चारोऽवसर्पः प्रणिधि-र्निगूढपुरुषश्चरः ॥१८१॥

भाषार्थ—अवश्याय, तुषार (पु० न०) प्रालेय, तुहिन, हिम (न०) नीहार, (पु० न०) ये सब वर्फ के नाम है इनके आगे 'कार' शब्द जोड़ देने से अवश्यायकर आदि तथा मृगाङ्क रोहिणीपति (पु०) ये सब चन्द्रमा के नाम है चार, अवसर्प, प्रणिधि, निगूढ़-पुरुष, चर (पु०) ये सब गुप्तचर के नाम है ॥ १८० ॥ १८१ ॥

तद्वानुक्तः सहस्राक्षः, सत्यार्थे ऋतसूनृते ।
अत्यन्ताय चिरायेति, प्राह्णेऽकस्माद् बलादिति १८२

भाषार्थ—इन गुप्त चर के नामों के आगे 'मतुप्' प्रत्यय लगा देने से सहस्राक्ष अर्थात् इन्द्र के नाम बन जाते है वे पुलिंग होते है ऋत: सूनृत (न०) ये दो सत्य के नाम है अत्यन्ताय (अ०) बहुत का, चिराय (अ०) बहुत काल का, प्राह्णे (अ०) प्रातः कालीन दिवस का अकस्मात् (अ०) यह अचानक का और बलात् (अ०) यह जबरदस्ती का नाम है ॥ १८२ ॥

प्रायेणेति कृतिश्चेति, विभक्तिप्रतिरूपकम् ।
रम्भा स्त्री कदली चिह्नं, मोचासारतरुश्च सा १८३

भाषार्थ—प्रायेण, (बाहुल्य) और कृतिः ये दोनों अव्यय हैं परन्तु विभक्ति कैसे रूप मालूम होते है इस लिये इन्हें विभक्ति प्रतिरूपक अव्यय कहते है रम्भा (स्त्री०) स्त्री और कदली को,

कदली (स्त्री०) चिन्ह (ध्वजा) और मोचा को तथा मोंचा (स्त्री०), सारतरु (शाल्मलि) और कदली को कहते है ॥ १८३ ॥

कीचकोध्वनिमद्वेणु-स्तालो गेयक्रमोद्भवः ।
पुष्करं मुरजं पद्मं, हस्तिहस्ताग्रनामकं ॥ १८४ ॥

भापार्थ—बजने वाले बांश को कीचक (पु.) कहते है । गाने की आवाज के क्रम से (चढ़ा उतार से) जो शब्द उत्पन्न होता है उसे ताल (पु०) कहते है, पुष्कर (न०) यह मृदंग, कमल, और हाथी की सूंड़ के आगे की अगुलि का नाम है ॥ १८४ ॥

निस्तलं वर्तुलं वृत्तं, स्थपुटं विषमोन्नतम् ।
दीर्घं प्रांशु विशालं च, बहुलं पृथुलं पृथु ॥ १८५ ॥

भापार्थ—निस्तल, वर्तुल, वृत्त (न०) ये गोल के नाम हैं ऊँचे नीचे विषम स्थल को स्थपुट (न०) कहते हैं दीर्घ, प्रांशु, विशाल (न०) ये लम्बे के नाम है । बहुल, पृथुल, पृथु (न०) ये तीन मोटे के नाम हैं ॥ १८५ ॥

उल्बणं दारुणं तिग्मं, घोरं तीव्रोग्रमुत्कटम् ।
शीतकं, तिमिरं याप्यं, मन्दं विद्धि विलम्बितम् १८६

भापार्थ—उल्बण, दारुण, तिग्म, घोर, तीव्र, उग्र, उत्कट, (न०) ये सब तेज के नाम हैं । शीतक, तिमिर याप्य, मन्द, विलम्बित, (पु० न०) ये सब देर के नाम हैं ॥ १८६ ॥

सौहार्दं सौहृदं हृद्यं, सौहृद्यं सख्यसौरभम् ।
मैत्री मैत्राधिकाजर्यं, साहाय्यं सङ्गतं मतम् ॥१८७॥

भाषार्थ—सौहार्द, सौहृद, हृद्य, सौहृद्य, सख्य, सौरभ (न०) मैत्री (स्त्री) मैत्रेयिक, अजर्य, साहाय्य, सगत (न०) ये सब मित्रता के नाम हैं ॥ १८७ ॥

स्वभावः प्रकृतिः शीलं, निसर्गो विस्रसा निजः।
योग्यो गुणनिकाभ्यासः, स्यादभीक्ष्णं मुहुर्मुहुः१८८

भाषार्थ—स्वभाव (पु०) प्रकृति (स्त्री०) शील (न०) निसर्ग (पुं०) विस्रसा (अ०) निज (पुं०) ये सब स्वभाव के नाम हैं। योग्य (पुं०) लायक को कहते हैं गुणनिका (स्त्री) अभ्यास (पुं०) ये दो अभ्यास के नाम है अभीक्ष्ण,मुहुर्मुहु (अ०) ये बारबार के नाम हैं ॥ १८८ ॥

मृषालीकं मुधा मोघं, वितथं विफलं वृथा।
विधुरं व्यसनं कष्टं, कृच्छ्रं गहनमुच्चरेत् ॥१८९॥

भाषार्थ—मृषा (अ०) अलीक (न०) मुधा (अ०) मोघ, वितथ, विफल (न०) वृथा (अ०) ये सब फजूल के नाम हैं विधुर, व्यसन, कष्ट, कृच्छ्र, गहन (पुं० न०) ये सब दुःख के नाम हैं। दुःख त्याज्य है ॥ १८९ ॥

समस्तं सकलं सर्वं, कृत्स्नं विश्वं तथाखिलम्।
शकलं विकलं खण्डं, शल्कं लेशं लवं विदुः।१९०।

भाषार्थ—समस्त, सकल,सर्व, कृत्स्न, विश्व, अखिल (न०) ये सब सम्पूर्ण के नाम हैं। शकल, विकल, खण्ड,शल्क, लेश, लव (न०) ये सब टुकड़े के नाम हैं ॥१९०॥

मर्मकोशं च कलहं, परिवादं छलं नयेत् ।
शोणितं लोहितं रक्तं, रुधिरं क्षतजासृजम् ॥१९१॥

भाषार्थ—मर्मकोश, कलह (पु०) ये दो लड़ाईके नाम हैं परिवाद (पु०) यह निन्दाका नाम है छल (न०) कपटको कहते है शोणित, लोहित, रक्त, रुधिर, क्षतज, असृज् (न०) ये सब रक्त (लोहू) के नाम है ॥ १९१ ॥

सततानारताजस्रा—न्वहं कन्यापति वरः
उद्वाहः परिणयनं, विवाहश्च निवेशनम् ॥ १९२ ॥

भाषार्थ—सतत, अनारत, अजस्र, अन्वह (अ०) ये चार हमेशाके नाम है कन्या के पति (दूलह) को वर (पुं०) कहते है उद्वाह (पुं०) परिणयन (न०) विवाह (पुं०) निवेशन (न०) ये चार विवाह के नाम है ॥ १९२ ॥

शुषिरं विवरं रन्ध्रं, छिद्रं गर्त्तं च गह्वरं ।
श्वभ्रं रस्यं च पातालं, नरकं यान्त्यमेधसः॥१९३॥

भाषार्थ—शुपिर, विवर, रन्ध्र, छिद्र, गर्त्त और गह्वर (न०) ये सव गड्ढे के नाम है । श्वभ्र, रस्य, पाताल, नरक (न०) ये चार नरक के नाम है इसमें अज्ञानी जीव पड़ते है ॥ १९३ ॥

अदभ्रं भूरि भूयिष्ठं, वहिष्ठं बहुलं बहु ।
प्रचुरं नैकमात्यन्त्यं, प्रभूतं प्राज्यपुष्कले ॥१९४॥

भाषार्थ—अदभ्र, भूरि, भूयिष्ठ, वहिष्ठ, बहुल, वहु, प्रचुर, नैक, आत्यन्त्य, प्रभूत, प्राज्य, पुष्कल (न०) ये सब बहुत के नाम है ॥ १९४ ॥

भावो भवश्च संसारः, संसरणं च संसृतिः।
तत्वज्ञश्चतुरो धीरस्त्यजेज्जन्माजवं जवं ॥१९५॥

भाषार्थ—भाव, भव, संसार (पु०) ससरण (न०) संसृति (स्त्री) ये सब संसार के नाम हैं जो तत्वज्ञ अर्थात् वस्तु के स्वरूप के ज्ञाता है चतुर है तथा धीर है वे इस संसार को शीघ्र ही छोड़ देते है ॥१९५॥

ओजस्व्यूर्जस्वितेजस्वी, तरस्वी च मनस्व्यपि।
भास्करो भासुरः शूरः, प्रवीरः सुभटो मतः॥१९६॥

भाषार्थ—ओजस्विन्, ऊर्जस्विन्, तेजास्विन्, तरस्विन्, मनस्विन् (पुं०) ये प्रतापी पुरुष के नाम है। भास्कर, भासुर, शूर, प्रवीर, सुभट (पु०) ये सब शूरवीर के नाम हैं ॥१९६॥

उररीकृतमप्यूरी–कृतमङ्गीकृतं तथा।
अस्तुंकारोऽभ्युपगमे, सत्यकारः पणार्पणे ॥१९७॥

भाषार्थ—उररीकृत, ऊरीकृत, अंगीकृत (न०) तथा अस्तुंकार (पुं०) ये स्वीकार के नाम है। बाजार में किसी चीज को निश्चित करने के लिए जो साई देकर प्रतिज्ञा की जाती है उसे सत्यंकार (पु०) कहते है ॥१९७॥

तनुत्रं वर्म कवच–मावृति र्बाणवारणम्।
कूर्पासं कञ्चुकं छत्र–मातपत्रोष्णवारणम्॥१९८॥

भाषार्थ—तनुत्र, वर्मन्, कवच (न०) आवृति (स्त्री) बाणवारण (न०) ये सब बखतर के नाम है। कूर्पास, कञ्चुक

(न०) य दो अँगरखे के नाम हैं । छत्र, आतपत्र, उष्णवारण (न०) ये तीन छत्ते के नाम हैं ॥ १९८ ॥

केशं शिरोरुहं बालं, कचं चिकुरमीहयेत् ।
चूड़ापाशं च धम्मिल्लं, कबरी केशबन्धनम् ॥१९९॥

भाषार्थ—केश, शिरोरुह, बाल, कच, चिकुर (पु०) ये सब बालों के नाम है। चूड़ापाश, धम्मिल्ल (पु०) कबरी (स्त्री) केशबन्धन (न०) ये सब स्त्री के चोटी कें नाम हैं ॥ १९९ ॥

क्षेमं कल्याणमभयं, श्रेयो भद्रं च मङ्गलम् ।
भावकं भविकं भव्यं, कुशलं च शिवं तथा ॥२००॥

भाषार्थ—क्षेम, (पु०, न०) कल्याण, अभय, श्रेयस्, भद्र, मगल, भावुक, भविक, कुशल और शिव (तीन) ये सब कल्याण के नाम है ॥ २०० ॥

वक्ता वाचस्पति र्यत्र, श्रोता शक्रस्तथापि तौ ।
शब्दपारायणस्यान्तं, न गतौ तत्र के वयम् ॥२०१॥

भाषार्थ—शब्द का समूह इतना भारी है कि वृहस्पति कहने वाले और इन्द्र महाराज सुनने वाले हुए तो भी वे पार न पा- सके, फिर हम लोग कैसे पार पा सकते है ॥ २०१ ॥

तथापि किञ्चित्कस्मैचित्, प्रतिबोधाय सूचितं ।
बोधयेत्कियदुक्तिज्ञं, मार्गज्ञः सह यांति किम् ॥२०२॥

भाषार्थ—तो भी किन्हीं लोगों को समझाने के लिये कुछ शब्द कहे है —जो कि सूचना मात्र है । क्योंकि युक्ति को जानने

वाले लोगों को सूचना मात्र ही दीजाती है । सच भी है कि मार्ग को जानने वाला साथ नहीं जाता किन्तु दूर से रास्ता बता देता है कि तुम्हारा मार्ग अमुकी २ ओर से गया है ॥ २०२ ॥

प्रमाणमकलंकस्य, पूज्यपादस्य लक्षणम् ।
द्विसन्धानकवेः काव्यं, रत्नत्रयमपश्चिमम् ॥२०३॥

भाषार्थ—अकलंक भट्टका प्रमाण, पूज्यपाद स्वामी का लक्षण और द्विसन्धान काव्य के रचयिता कवि का उक्त काव्य ये तीनों अपूर्व ही रत्न है ।

भावार्थ—अकलंक देव ने जैसा प्रमाण का स्वरूप कहा है वैसा और किसी ने नहीं कहा तथा पूज्यपाद स्वामी ने जैसे वस्तुओं के लक्षण बनाए है वैसे लक्षण दूसरों ने नहीं बनाए और धनञ्जय कवि के बनाए हुए द्विसन्धान काव्य की तरह काव्य भी किसी ने नहीं बनाया, इस लिए हम लोगों के लिए ये तीन रत्न अपूर्व ही है क्योंकि पहले कभी सम्यग्दर्शन सम्यग्ज्ञान और सम्यक् चारित्र इन तीनों के सिवा किसी का नाम रत्नत्रय नहीं सुना था ।

कवे र्धनञ्जयस्येयं, सत्कवीनां शिरोमणेः ।
प्रमाणं नाम-मालेति, श्लोकानाञ्च शतद्वयम् ॥२०४॥

भाषार्थ—बड़े २ कवियों में शिरोमणि धनञ्जय नाम के कवि की बनाई हुई यह नाम-माला, सर्व मान्य है इसके श्लोकोंकी संख्या २०० के प्रमाण है ॥ २०४ ॥

ब्रह्माणं समुपेत्य वेदनिनदव्याजात्तुषाराचल-
स्थानस्थावरमीश्वरं सुरनदीव्याजात्तथा केशवं ।

अब्ध्यम्भोनिधिशायिनं जलनिधि ध्वानापदेशादहो
पूत्कुर्वन्ति धनञ्जस्य च भिया शब्दाः समुत्पीड़िताः

भाषार्थ—यह एक भारी आश्चर्य की बात है कि धनञ्जय कवि के भय से पीड़ित होकर शब्द, वेदध्वनि के बहाने से ब्रह्मा के पास, गंगा के शब्द के बहाने से महादेव के पास तथा समुद्र के शब्दों के मिस से विष्णु भगवान के पास जाकर पुकार करते हैं—अपना दुःख कहते हैं ॥

इति श्रीमद्धनञ्जयकविविरचित नाम-माला समाप्ता ।



॥ श्रीजिनाय नमः ॥

अथ अनेकार्थ नाम-माला ।

गम्भीरं रुचिरं चित्रं, विस्तीर्णार्थप्रकाशकं ।
शब्दं मनाक् प्रवक्ष्यामि, कवीनां हितकाम्यया॥१॥

भाषार्थ—मैं (धनञ्जय) कवियों के हितकी इच्छासे विशद अर्थ को बताने वाले, गम्भीर, मनोहर तथा विचित्र शब्दों के समूह को कहता हूं ॥ १ ॥

अर्हत्पिनाकिनौ शम्भू, जिनावर्हत्तथागतौ ।
वेदसूर्यौ विवस्वन्तौ, विष्णुरुद्रौ वृषाकपी ॥ २ ॥

भाषार्थ—शम्भु शब्द, अर्हत् (जिन) और पिनाकिन् (महादेव) इन दोनों को कहने वाला है जिन शब्द, अर्हत् और तथागत (बुद्ध) का वाचक है विवस्वत् शब्द, वेद और सूर्य का वाची है वृषाकपि शब्द, विष्णु और रुद्र का वाचक है ये सब शब्द पुल्लिंग होते हैं ॥ २ ॥

वैकुण्ठाविन्द्रगोविन्दा-वनन्तौ शेषशार्ङ्गिणौ ।
जीमूतौ कारिकुत्कीलौ, पर्जन्यौ शक्रवारिदौ ॥ ३ ॥

भाषार्थ—वैकुण्ठ शब्द, इन्द्र और गोविन्द का, अनन्त, शब्द, शेष (सर्प विशेष) और शार्ङ्गिन् (महादेव) का, तथा जीमूत शब्द, कारिकुत् (मेघ) और कील (कीली) का और पर्जन्य शब्द, शक्र और वारिद (मेघ) का वाचक है ये सब शब्द पुल्लिंग हैं ॥ ३ ॥

वनमम्भसि कान्तारे, भुवनं विष्टपेऽर्णसि ।
घृतं सर्पिषि पानीये, विषं हालाहले जले ॥ ४ ॥

भावार्थ—वन (न०) शब्द, अम्भस् (जल) और कान्तार (जगल) का, भुवन (न०) शब्द, विष्टप (ससार) और अर्णस (जल) का, घृत (न०) शब्द, सर्पिष् (घी) और पानीय (जल) का तथा विष (न०) शब्द, हालाहल और जल का वाचक है॥४॥

तल्पं दारेषु शय्यायां, ज्योतिश्चक्षुषि तारके ।
धवले सुन्दरे रामो, वामो वक्रे मनोहरे ॥ ५ ॥

भावार्थ—तल्प (न०) शब्द, दारा (स्त्री) और शय्या का, ज्योतिष् (न०) शब्द, चक्षुष् और तारक (तारा) का, राम (पु०) शब्द, धवल (उज्ज्वल) और सुन्दर का, वाम (पु०) शब्द वक्र (टेढ़े) और मनोहर का वाचक है ॥ ५ ॥

नक्षत्रे मन्दिरे धिष्ण्यं, वसने गगनेऽम्बरं ।
परिधौ पादपे सालः, सिन्धुः स्रोतसि योषिति ॥६॥

भावार्थ—धिष्ण्य (न०) शब्द, नक्षत्र और मन्दिर का वाचक है अम्बर (न०) शब्द, वसन (वस्त्र) और गगन (आकाश) का, साल (पु० न०) शब्द, परिधि (कोट) और पादप (वृक्ष) का तथा सिन्धु (पु०) शब्द, स्रोतस् (नदी) और योषित् (स्त्री) का वाची है ॥ ६ ॥

सारसः शकुनौ धूर्त्ते, केतनं दीधितौ ध्वजे ।
मयूखः कीलके दीप्तौ, पतङ्गः शलभे रवौ ॥ ७ ॥

भाषार्थ—सारस (पु०) शब्द, शकुनि (पक्षी) और धूर्त्त (चालाक) का, केतन (न०) शब्द, दीधिति (किरण) और ध्वज (पताका) का, मयूख (पु०) शब्द, कीलक और दीप्ति का, एवं पतंग (पु०) शब्द, शलभ और रवि (सूर्य) का वाची है ॥ ७ ॥

अञ्जनः कज्जले नागे, सारङ्गः पृषते गजे ।
सरलः प्रगुणे वृक्षे, पुन्नागः सन्नरे तरौ ॥ ८ ॥

भाषार्थ—अञ्जन (पु० न०) शब्द, कज्जल और नाग (हाथी) का, सारङ्ग (पु०) शब्द, पृषत (हिरण) और गज (हाथी) का, सरल (पु०) शब्द प्रगुण (सीधे) और वृक्ष का, तथा पुन्नाग (पु०) शब्द, सन्नर (सज्जन) और तरु (वृक्ष-विशेष) का वाची है ॥ ८ ॥

पाञ्चजन्योऽनले शंखे, कम्बुः शंखे मतङ्गजे ।
कस्वरो द्युभवे द्युम्ने, स्यन्दनं शकटेऽम्बुनि ॥ ६ ॥

भाषार्थ—पाञ्चजन्य (पु० न०) शब्द, अनल (अग्नि) और शख का, कम्बु (पु०) शब्द, शख और मतङ्गज (हाथी) का, कस्वर (पु०) शब्द, द्युभव (देव) और द्युम्न (धन) का, एवं स्यन्दन (न०) शब्द, शकट (गाडी) और अम्बु (जल) का वाची है ॥ ६ ॥

अद्रिर्गिरिवनस्पत्योः, शिखरी तरुभूधयोः ।
राजा चन्द्रमहीपत्योः, द्विजो दशनविप्रयोः ॥ १० ॥

भाषार्थ—अद्रि, (पु०) शब्द, गिरि और वनस्पति का, शिखरिन् (पु०) शब्द, तरु और भूध् (पहाड़) का, राजन् (पु०) शब्द, चन्द्र और महीपति (राजा) का, एवं द्विज (पु०) शब्द, दशन (दांत) और विप्र (ब्राह्मण) का वाची है ॥ १० ॥

मोचामरस्त्रियोः रम्भा, कदली ध्वजमोचयोः ।
अशोकः सुमनस्तर्वोः, सुमनाः सुरपुष्पयोः ॥११॥

भाषार्थ—रम्भा (स्त्री) शब्द, मोचा (केल) और अमर-स्त्री (देवागना) का, कदली (स्त्री) शब्द, ध्वज और मोचा का, अशोक (पु०) शब्द, सुमनस् (पुष्प) और तरु का, एवं सुमनस् (पु०) शब्द, सुर (देव) और पुष्प का वाची है ॥११॥

मुक्तारजतयोस्तारो, भूरि भूयः सुवर्णयोः ।
पानीयदुग्धयोः क्षीरं, पयः सलिलदुग्धयोः ॥१२॥

भाषार्थ—तार (पु०) शब्द, मुक्ता और रजत (चांदी) का, भूरि (अ०) शब्द, भूयस् (बाहुल्य) और सुवर्ण का, क्षीर (न०) शब्द, पानीय और दुग्ध का एवं पयस् (न०) शब्द, सलिल (जल) और दुग्ध का वाची है ॥ १२ ॥

कालप्रकर्षयोः काष्ठा, कोटिः संख्याप्रकर्षयोः ।
रन्ध्रसंश्लेषयोः सन्धिः, सिन्धुर्नदसमुद्रयोः ॥१३॥

भाषार्थ—काष्ठा (स्त्री) शब्द, काल और प्रकर्ष (बड़प्पन) को, कोटि (स्त्री) शब्द, संख्या और प्रकर्ष को, सन्धि (स्त्री) शब्द, रन्ध्र (छिद्र) और संश्लेप (मिलाप) को तथा सिन्धु (पु०) शब्द, नद और समुद्र को कहता है ॥ १३ ॥

निषेधदुःखयोर्बाधा, व्यामोहो मूर्खमौढ्ययोः।
कौपीनाकार्ययोर्गुह्यं, कीलालं रुधिराम्भसोः ॥१४॥

भाषार्थ--बाधा (स्त्री) शब्द, निषेध और दुःख का, व्यामोह (पु०) शब्द, मूर्ख और मौढ्य को, गुह्य (न०) शब्द, कौपीन (लंगोटी) और अकार्य (पाप) को, तथा कीलाल (न०) शब्द, रुधिर और अम्भस् को कहता है ॥ १४ ॥

मौल्यसत्कारयोरर्घो, जात्यः श्रेष्ठकुलीनयोः।
मेघवत्सरयोरब्द-स्तार्क्ष्यो हयगरुत्मतोः ॥ १५ ॥

भाषार्थ--अब्द (पुं०) शब्द, मेघ और वत्सर (वर्ष) को, जात्य (पुं०) शब्द, श्रेष्ठ और कुलीन को, अर्घ (पुं०) शब्द, मौल्य (कीमत) और सत्कार को, तथा तार्क्ष्य (पुं०) शब्द, हय (घोड़ा) और गरुत्मत् (गरुड़) को कहता है ॥ १५ ॥

स्तब्धतास्थूणयोः स्तम्भ-श्चर्चा चिन्ता वितर्कयोः।
हरकीलकयोः स्थाणुः, स्वैरः स्वच्छन्दमन्दयोः॥१६

भाषार्थ—स्तम्भ (पु०) शब्द, स्तब्धता (धीरता) और स्थूण (थम्भा) को, चर्चा (स्त्री) शब्द, चिन्ता और वितर्क (विचार) को तथा स्थाणु (पुं०) शब्द, हर (महादेव) और कीलक (कीला) को और स्वैर (पु०) शब्द, स्वच्छन्द (स्वतन्त्र) और मन्द (धीर) को कहता है ॥ १६ ॥

शङ्कुस्संकीर्णविवरे, पलालाग्नौ च कीलके
संख्यायां काननोद्भूते, वह्नौ दावो दवोऽपि च॥१७॥

भाषार्थ—शंकु (पु०) शब्द, संकीर्णविवर (छोटा छिद्र) पलालाग्नि (भूसे की आग) कीलक और संख्या को कहता है। दाव और दव (पुं०) ये दोनों शब्द, जंगल में लगी हुई अग्नि अर्थात् दमार के वाचक हैं ॥ १७ ॥

कीनाशः कृपणे भृत्ये, कृतान्ते पिशिताशिनि ।
तथा पुण्यजनान् प्राहुः, सज्जनान् राक्षसानपि॥१८॥

भाषार्थ—कीनाश (पु०) शब्द, कृपण, भृत्य, कृतान्त (यम) पिशिताशिन् (मास भक्षी) को कहता है तथा पुण्य-जनों अर्थात् पुण्यात्मा पुरुषों को, सज्जनोंको और राक्षसों को भी कहता है ॥ १८ ॥

विरोचनो रवौ चन्द्रे, दनुसूनौ हुताशने ।
हंसो नारायणे वृध्ने, यतावश्वे सितच्छदे ॥ १९ ॥

भाषार्थ—विरोचन (पु० न०) शब्द, रवि, चन्द्र, दनुसूनु, (प्रद्युम्न) और हुताशन (अग्नि) को कहता है। हंस (पु०) शब्द, नारायण, बृध्न (सूर्य) यति (साधु) अश्व (घोड़ा) और सितच्छद (कमल) को कहता है ॥ १९ ॥

सोमश्चन्द्रोऽमृतं सोमः, सोमो राजा युगादिभूः ।
सोमः प्रतानभेदः, सोमः पौलस्त्यादिक्पतिः ॥

भाषार्थ—सोम (पु०) शब्द, चन्द्रमा, अमृत, राजा, युगादिभू, (ब्रह्मा) और लताविशेष तथा पौलस्त्यादिक्पति (वरुण) को कहता है ॥ २० ॥

अजो विधिरजो विष्णु-रजः शम्भुरजस्तमः ।
अजस्त्रैवार्षिको व्रीहि-रजो रामपितामहः ॥ २१ ॥

भाषार्थ—अज (पु०) शब्द, विधि (ब्रह्मा) विष्णु, शम्भु, (महादेव) अन्धकार, और तीनवर्षकीशालि को कहता है तथा रामचन्द्र जी के पितामह (बाबा) को भी अज कहते हैं ॥२१॥

शुद्धेऽनुपहते वन्हौ, ब्राह्मणे सचिवोत्तमे ।
आषाढ़ेऽध्यात्मसंवित्तौ, ब्रह्मचर्य्ये शुचिर्मता ॥२२॥

भाषार्थ—शुचि (स्त्री) शब्द के आठ अर्थ है । वे ये है शुद्ध, अनुपहत, वह्नि, ब्राह्मण, उत्तममन्त्री, आषाढ़ (महीना) अध्यात्मज्ञान, और ब्रह्मचर्य ॥ २२ ॥

अर्थोऽभिधेयरैवस्तुप्रयोजननिवृत्तिषु ।
भावः पदार्थचेष्टात्मसत्ताभिप्रायजन्मसु ॥ २३॥

भाषार्थ—अर्थ (पु०) शब्द के पांच अर्थ है वे, अभिधेय (वाच्य) रै (धन) वस्तु, प्रयोजन, और निवृत्ति, ये हैं । भाव (पु०) शब्द के, छः अर्थ हैं वे, पदार्थ, चेष्टा, आत्मा, सत्ता, अभिप्राय और जन्म (उत्पत्ति) ये हैं ॥ २३ ॥

प्रायो भूमोपमातिक्यप्रभृत्यन्ननिवृत्तिषु ।
अन्तः पदार्थसामीप्यधर्मसत्वव्यतीतिषु ॥ २४॥

भाषार्थ—प्रायस् (अ०) शब्द के छः अर्थ हैं वे 'भूमन् (बाहुल्य) उपमा, आतिश्य, प्रभृति (आदि), अन्न और निवृत्ति, ये है अन्त (पु०) शब्द, पदार्थ, सामीप्य, धर्म, सत्व (बल) व्यतीति (अखीर) इन पांच अर्थों को कहता है ॥ २४ ॥

अक्षो द्यूते विरुथाङ्गे, नयनादौ विभीतके।
सारः श्रेष्ठे बले वित्ते, केशे जलचरे स्थिरे ॥ २५ ॥

भाषार्थ—अक्ष (पु०) शब्द, के द्यूत (जुवा) विरुथाङ्ग (सेना के अंग-सिपाही वगैरा) नयन और आदि पद से धुर, व्यवहार आदि तथा विभीतक (भयानक) को कहता है। सार, (पु०) शब्द के छह अर्थ है श्रेष्ठ, बल, वित्त, केश, जलचर और स्थिर ॥ २५ ॥

वाचि वारि पशौ भूमौ, दिशि लोम्नि पवौ दिवि।
विशिखे दीधितौ दृष्टा-वेकादशसु गौर्मतः ॥२६॥

भाषार्थ—गो (पु० स्त्री०) शब्द के ग्यारह अर्थ है वे ये ह वाच् (बोली) वार् (पानी) पशु, भूमि, दिश्, लोमन् (रोम) पवि (वज्र) द्यु (आकाश) विशिख (बाण) दीधिति (किरण) और दृष्टि ॥ २७ ॥

चन्द्रे सूर्ये यमे विष्णौ, वासवे दर्दुरे हये।
मृगेन्द्रे वानरे वायौ, दशस्वपि हरिः स्मृतः ॥२७॥

भाषार्थ—हरि (पु०) शब्द का प्रयोग इन दश अर्थों में किया जाता है चन्द्र, सूर्य, यम, विष्णु, वासव (इन्द्र) दर्दुर, (मेंढ़क) हय (घोड़ा) मृगेन्द्र (सिंह) वानर (वन्दर) और वायु ॥ २७ ॥

पद्मे करिकरप्रान्ते, व्योम्नि खड्गफले गदे।
वाद्यभाण्डमुखे तीर्थे जले पुष्करमष्टसु ॥ २८ ॥

भाषार्थ—पुष्कर (न०) शब्द के आठ अर्थ हैं वे—पद्म (कमल), हाथी की सूँड़ के अग्रभाग वाली अगुली, व्योमन् (आकाश), तलवार की मूठ, गद, वाद्यभाण्डमुख, तीर्थ और जल ये हैं ॥ २८ ॥

शृङ्गारादौ कषायादौ, घृतादौ च विषे जले ।
निर्यासे पारदे रागे, वीर्येऽपि रस इष्यते ॥२९॥

भाषार्थ—शृंगार, हास्य, करुण, रौद्र, वीर, भयानक, बीभत्स और अद्भुत ये आठ काव्य गत रस हैं इनमें, कषाय तिक्त, कटुक, आम्ल, मिष्ट, ये पाच रस पुद्गल के गुण हैं इनमें, तथा घी, लवण, दधि, दुग्ध, तैल, मिठाई ये छह भोजन के स्वाद बढ़ाने वाले रस हैं इनमें, और विष, जल, निर्यास, पारद (पारा) राग, वीर्य, इनमें रस (पु०) शब्द का प्रयोग होता है ॥ २९ ॥

तीर्थं प्रवचने पात्रे, लब्धाम्नाये विदाम्वरे ।
पुण्यारण्ये जलोत्तारे, महासत्वे महामुनौ ॥३०॥

भाषार्थ—तीर्थ (न० पु०) शब्द, प्रवचन (आगम) पात्र (वर्तन) लब्धाम्नाय-महत्व-को जैसे कि इस वक्त, महावीर स्वामी की आम्नाय है इसलिये उनका तीर्थ कहा जाता है। तथा विदाम्बर (पण्डित) पुण्यारण्य (शिखर सम्मेद आदि) जलोत्तार (सीढ़ी) महासत्व, और महामुनि को कहता है ॥ ३० ॥

धातुः पञ्चसु लोहेषु, शरीरस्य रसादिषु ।
पृथिव्यादिचतुष्के च, स्वभावे प्रकृतावपि ॥३१॥

भाषार्थ—धातु (पुं०) शब्द के पांच अर्थ हैं। लोहादि

(१) जैसे चांदी, सोना वगैरा। शरीर के रसादि (२) जैसे रस, रक्त, मांस, मेदा, मज्जा, हड्डी, शुक्र (वीर्य)। पृथिवी आदि (३) जैसे पृथिवी, अप्, तेज, वायु। तथा स्वभाव (४) और प्रकृति।

प्रधानशृङ्गलांगूलभूषापुण्ड्रप्रभावना।
ध्वजलक्ष्मतुरङ्गेषु, ललामो नवसु स्मृतः ॥३२॥

भाषार्थ—प्रधान, शृङ्ग (सींग) लांगूल (पूछ), भूषा (भूषण), पुण्ड्र (सांप), प्रभावना, ध्वज, लक्ष्मन्, और तुरंग (घोड़ा) ये नौ ललाम (पु०) शब्द के अर्थ हैं अर्थात् ललाम् शब्द इन नौ अर्थ को कहता है॥ ३२॥

आकृतावक्षरे रूपे, ब्राम्हणादिषु जातिषु।
माल्यानुलेपने चैव, वर्णः षट्सु निगद्यते ॥३३॥

भाषार्थ—आकृति अक्षर (अ आ आदि), रूप, (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र) जाति, माल्य (माला) और अनुलेपन (उपटना) ये छह, वर्ण (पुं०) शब्द के अर्थ हैं॥ ३३॥

आकारादावुदात्तादौ, षड्जादौ निस्वने स्वरः।
समयाचारसिद्धान्त, कालेषु समयः स्मृतः ॥३४॥

भाषार्थ—अ आ आदि, उदात्त, अनुदात्त, स्वरित आदि षड्ज आदि (निषाद, ऋषभ, गान्धार, षड्ज, मध्यम, धैवत, पञ्चम) निस्वन ये सब स्वर (पु०) शब्द के अर्थ है समय (संकेत) आचार, सिद्धान्त (आगम) और काल ये सब समय (पु०) शब्द के अर्थ है॥ ३४॥

तन्त्रं प्रधाने सिद्धान्ते, सैन्यं तन्तौ परिच्छिदे ।
सत्वमोजसि सत्ताया, मुत्साहे स्थेम्नि जन्तुषु॥३५॥

भाषार्थ---तन्त्र (न०) शब्द के प्रधान, सिद्धान्त, सैन्य (सेना), तन्तु और परिच्छिद (परिग्रह) ये पांच अर्थ है सत्व (न०) शब्द के, ओजस् (तेज), सत्ता (अस्तित्व) उत्साह, स्थेमन् (स्थिर) और जन्तु, ये पांच अर्थ हैं ॥ ३५ ॥

रूपादौ तन्तुषु ज्याया-मप्रधाने नये गुणः ।
ज्ञानचारित्रमोक्षात्म-श्रुतिषु ब्रह्मवाग्वरा ॥३६॥

भाषार्थ---रूप, रस, गन्ध, स्पर्श आदि, तन्तु, ज्या, धनुष् की डोरी-तथा अप्रधान-गौण-और नय इन पाच अर्थों में गुण शब्द का प्रयोग होता है वह पुल्लिंग है। ज्ञान, चारित्र, मोक्ष, आत्मा और श्रुति (वेद) इन पाच अर्थों में ब्रह्मवाच् (स्त्री) शब्द का प्रयोग होता है ॥ ३६ ॥

अवकाशे क्षणे वस्त्रे, वहिर्योगे व्यतिक्रमे ।
मध्येऽन्तःकरणे रन्ध्रे, विशेषे विरहेऽन्तरं ॥ ३७ ॥

भाषार्थ---अवकाश (छुट्टी) क्षण, वस्त्र, वहिर्योग, व्यतिक्रम, मध्य, अन्तःकरण (मन) रन्ध्र, विशेष, और विरह इन दश अर्थों में अन्तर (न०) शब्द का प्रयोग होता है ॥ ३७ ॥

हेतौ निदर्शने प्रश्ने, स्तुतौ कण्ठसमीकृतौ ।
आनन्तर्येऽधिकारार्थे, माङ्गल्ये चाथ इष्यते ॥ ३८॥

भाषार्थ—हेतु, निदर्शन (दृष्टान्त) प्रश्न, स्तुति, कण्ठसमीकृति अर्थात् किसी पुस्तक का प्रारम्भ आनन्तर्य (अव्यवहितता), अधिकार और मगल इन आठ अर्थों में अथ (अ०) शब्द का प्रयोग होता है ॥ ३८ ॥

हेतावेवंप्रकारादौ, व्यवच्छेदे विपर्यये ।
प्रादुर्भावे समाप्तौ च, इतिशब्दः प्रकीर्तितः॥३९॥

भाषार्थ—हेतु, एवंप्रकार आदि, व्यवच्छेद, विपर्यय, प्रादुर्भाव, (उत्पत्ति) समाप्ति इन अर्थों में इति (अ०) शब्द का प्रयोग होता है ॥ ३९ ॥

धर्मो धनुष्यहिंसादा-वुत्पादादावये नये ।
द्रव्यं क्रियाश्रये वित्ते, जीवादौ दारुवैकृते ॥४०॥

भाषार्थ—धनुष्, अहिसा, सत्य आदि, उत्पाद, व्यय, ध्रौव्य, अय (विधि) और नय इन अर्थों में धर्म शब्द का प्रयोग होता है। क्रियाश्रय अर्थात् जिसमें क्रिया पाई जाय, वित्त (धन) जीव, अजीव और काठ से बनाए हुए मंगल द्रव्य आदि इन अर्थों में द्रव्य (न०) शब्द का प्रयोग होता है ॥ ४० ॥

मूर्त्तिमत्सु पदार्थेषु, संसारिण्यपि पुद्गलः ।
अकर्मकर्मनोकर्म-जातिभेदेषु वर्गणा ॥ ४१ ॥

भाषार्थ—मूर्त्तिवाले पदार्थ और संसारी जीवों में पुद्गल (पु०) शब्द का प्रयोग होता है। अकर्म अर्थात् कर्म से भिन्न पुद्गल स्कन्ध, कर्म ज्ञानावारणादि, नोकर्म्म औदारिक, वैक्रियिक

अहारक ये तीन शरीर और छह पर्य्याप्ति (आहार, शरीर, इन्द्रिय, श्वासोच्छ्वास, भाषा और मन) रूप होने वाले पुद्गल, और जातिभेद इन में वर्गणा (स्त्री) शब्द का प्रयोग होता है ॥ ४१ ॥

ऐश्वर्यस्य समग्रस्य, वीर्यस्य यशसः श्रियः ।
वैराग्यस्यावबोधस्य, षण्णां भग इति स्मृतः ॥४२॥

भाषार्थ—संपूर्ण ऐश्वर्य, वीर्य, यशस्, श्री वैराग्य अवबोध इन छह को भग (पुं०) कहते हैं ॥ ४२ ॥

प्राहुः कैवल्यमार्हन्त्ये, विविक्ते निर्वृतावपि ।
लब्धिः केवलबोधादा—विष्टाप्तौ नियतौ श्रियां ४३

भाषार्थ—कैवल्य (न०) शब्द, आर्हन्त्य अर्थात् अर्हन्त भगवान की अनन्त चतुष्टयरूप लक्ष्मीको, विविक्त—निर्जन स्थानको, और निर्वृति (मोक्ष) को कहता है । केवलज्ञान, केवल दर्शन आदि, इष्टाप्ति अर्थात् इष्ट वस्तुकी प्राप्ति, नियति (कर्म) श्री (लक्ष्मी-शोभा) इन अर्थोंमें लब्धि (स्त्री) शब्द का प्रयोग होता है ॥ ४३ ॥

अनेकान्ते च विद्यादौ, स्यान्निपातः शुभे क्वचित् ।
दर्शनादौ मणौ रत्नं, भव्यः शस्ते प्रसेत्स्यति ॥४४॥

भाषार्थ—स्यात् (अ०) शब्द का प्रयोग, अनेकान्त और विद्या आदि में होता है अर्थात् स्यात् शब्द अनेकान्त जोकि जैनियोंने ही माना है जिसका अर्थ होता है कि सब पदार्थ अनेक धर्मवाले हैं, उसको और विद्या आदि को भी कहता है तथा कहीं २ शुभ अर्थ में भी स्यात् शब्द का प्रयोग होता है । सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान,

सम्यक्‌चारित्र और मणि इनमें रत्न (न०) शब्द का प्रयोग होता है। भव्य (पुं०) शब्द का प्रयोग, शस्त (समीचीन अर्थात् प्रशंसा योग्य वस्तु) में और प्रसेत्स्यत् (मोक्ष की योग्यता रखने वाले और सिद्ध होने वाले जीव) में होता है ॥ ४४ ॥

परमात्मा जिने सिद्धे, परमेष्ठ्यर्हदादिषु।
सिद्धः सिद्धनिषद्याया–मर्हत्सिद्धश्रियामपि ॥४५॥

भावार्थ—जिन, सिद्ध और अर्हत् आदि पंच परमेष्ठी इन अर्थों में परमात्मन् (पुं०) शब्द का प्रयोग किया जाता है। सिद्ध (पुं०) शब्द का प्रयोग, सिद्धनिषद्या अर्थात् सिद्धों के ठहरनेके स्थान में और अर्हत् तथा सिद्ध की लक्ष्मी में होता है ॥

अर्हत्सिद्धमितिद्वाव–प्यर्हत्सिद्धाभिधायिनौ।
अर्हदादीनपि प्राहुः, शरणोत्तममङ्गलान् ॥४६॥

भावार्थ—अर्हत् और सिद्ध ये दोनों शब्द अर्हत् तथा सिद्ध के वाची हैं आचार्य लोगों ने अर्हत् आदि परमेष्ठिओं को शरण, उत्तम और मंगलरूप कहा है ॥ ४६ ॥

इति कविशिरोमणि श्रीमद्धनञ्जयकविविरचिता अनेकार्थ नाम-माला समाप्ता।



Printed by Pandya Gulab Shankar, at the Tara Printing Works, Benares.

अनुक्रमणिका ।

शब्द श्लोक।